Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

अविहिंसामेव पव्वए।

अहिंसा में ही प्रव्रजन कर।

• नई दिल्ली • वर्ष 23 • अंक 6 • 15 - 21 नवंबर, 2021 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 13-11-2021 • पेज : 12 • ₹ 10

गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी जन्म-दिवस-अणुव्रत दिवस - समण श्रेणी दिवस

विशिष्ट संपदाओं के धनी थे गणाधिपति गुरुदेवश्री तुलसी : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, ६ नवंबर, २०२१

कार्तिक शुक्ला द्वितीया। आज से लगभग १०७ वर्ष पूर्व राजस्थान के लाडनूं शहर में तेरापंथ के नवम अधिशास्ता आचार्यश्री तुलसी का जन्म माँ वंदना की कुक्षी से हुआ था। वो माता-पिता भी धन्य हो जाते हैं, जिनके यहाँ भावी अणगार का अवतरण होता है। तेरापंथ धर्मसंघ में आज के दिन को अणुव्रत दिवस के रूप में समायोजित किया जाता है।

अणुव्रत दिवस पर अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि अर्हत् वाङ्मय में कहा गया है–आकाश अनंत है। उस अनंत आकाश का एक हिस्सा, बहुत छोटा सा हिस्सा लोकाकाश है। लोकाकाश के भी एक हिस्से में एक चंद्रमा को भी देखते हैं, सूर्य को भी देखते हैं।

शास्त्र में आचार्य की अभिवंदना-वंदना की गई है। उस वंदना के भीतर कुछ अंशों में आचार्य का स्वरूप भी प्रकट किया गया है। दशवैकालिक आगम के नौवें अध्ययन के श्लोकों में आचार्य को कुछ करणीय पथदर्शन देने वाले भी मिल सकते हैं। शिष्यों के तो वे अभिवंदना के रूप में उच्चारणीय हो सकते हैं। आचार्यों से उन्हें पथदर्शन पाने के लिए भी वे उपयुक्त योग्य बन सकते हैं।

जो गुरु मुझे सतत अनुशिष्टि देते हैं, उन गुरुओं की मैं सतत पूजा करता हूँ। ये शिष्य की ओर से है। इससे आचार्य यह स्मृति कर सकते हैं कि शिष्य मेरी पूजा इसलिए करता है कि मैं उसे सतत अनुशिष्टि देता हूँ, तो मेरे द्वारा अनुशिष्टि दी जाती रहे, ताकि मैं पूजा के योग्य बना रह सकूँ।

आचार्यों की शृंखला में मैंने या हममें से कुछ ने देखा वो थे–आचार्य तुलसी। शास्त्र में कहा गया है कि चंद्रमा कौमुदि से जैसे निर्झर आकाश में शोभायमान होता है, नक्षत्र तारायण से परिवृत्त होकर, वैसे आचार्य भिक्षुओं के मध्य शोभायमान होते हैं। आचार्य तुलसी की मैं स्मृति करता हूँ तो उनका मुखारविंद जो था वो चंद्रमा के समान, मुस्कान भरा वदनारविंद सामने आता है। विराजमान होते, तो मानो कोई राजा-महाराजा विराजमान हैं। कोई विशिष्ट व्यक्तित्व या दर्शनीय मूर्ति विराजामन है।

मेरी दृष्टि में शरीर का ज्यादा महत्त्व नहीं है। महत्त्व आदमी की साधना, ज्ञान, योग्यता का है। शरीर का थोड़ा महत्त्व हो सकता है। शरीर की सक्षमता का कुछ अधिक महत्त्व है। गुरुदेव तुलसी में ये सारे गुण देखे हैं। उनके पास शरीर संपदा भी थी। उनकी प्रतिभा अपने ढंग की थी, कुछ विशिष्ट थी। उनके पास वाणी की संपदा, गीत की संपदा भी थी। गीत बनाने और गाने की भी संपदा थी। उनके पास जो राग-रागिनियों का ज्ञान था, वो विरल कहा जा सकता है।

आज के दिन एक महापुरुष ने इस धरती पर जन्म ग्रहण किया था। ऐसे सपूत को जन्म देने वाली मातृभूमि लाडनूं है। गुरुदेव तुलसी ने अपने जीवन में कितने कार्य किए। उन्होंने समण-श्रेणी का प्रादुर्भाव किया। समण श्रेणी के जन्म को भी आज ४१ वर्ष संपन्न हो रहा है। कितनी-कितनी समणियाँ और समण इस श्रेणी में आए हैं। समणियाँ अपने ढंग से कार्य करती हैं। समण श्रेणी का भी अच्छा साधना का पक्ष रहे। साध्वीवर्या जी इनकी व्यवस्था में अच्छा योगदान दे रही हैं।

परमपूज्य गुरुदेव तुलसी ने अणुव्रत का जो सूत्रपात किया, मानव जाति के लिए वह एक कल्याणकारी कार्य है। वे स्वयं अणुव्रत के प्रति प्रेम का विशेष भाव रखने वाले थे। अणुव्रत उनका प्रिय विषय था। कितना-कितना अणुव्रत का प्रचार कर अणुव्रत को पोषण देते रहते थे। अनेकों संस्थाएँ अणुव्रत से जुड़ी रही हैं। अणुव्रत न्यास आध्यात्मिक-धार्मिक संदर्भों में अलग योग्दान दे सकती हैं।

अणुव्रत विश्व भारती भी एक ऐसी संस्था बन पड़ी है, जिसमें व्यापकता आ गई है। अनेक गतिविधियाँ आज उस संस्था के अंतर्गत समाहित है। अनेक कार्यकर्ता इससे जुड़े हुए हैं। वे अपनी शक्ति का नियोजन अणुव्रत के प्रचार-प्रसार में करते रहें। अणुव्रत नैतिकता, संयम पर आधारित कार्यक्रम है। परमपूज्य आचार्य महाप्रज्ञ जी का साया भी अणुव्रत को मिला था।

अणुव्रत के प्रवर्तक आचार्य तुलसी का जन्म दिवस अणुव्रत दिवस के रूप में प्रतिष्ठित है। मानव-मानव में नैतिकता, संयम, सद्भावना की चेतना जिस आंदोलन में है, उस आंदोलन को बढ़ाने में चारित्रात्माओं की शक्ति लगे और कार्यकर्ताओं की शक्ति भी लगे। अणुव्रत का काम आगे बढ़ता रहे।

आज का दिन आचार्य तुलसी जन्म दिवस, समण श्रेणी दिवस और अणुव्रत दिवस से जुड़ा हुआ है। हम सभी अणुव्रत के कार्य करते रहें, यह काम्य है।

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी ने कहा कि गुरुदेव तुलसी का जन्म अकेला नहीं है। यह एक त्रिपदी है। ऐसा भी समय था हमारे धर्मसंघ में कोई जन्म दिवस या महोत्सव नहीं मनाया जाता था। पूज्य जयाचार्य की सूझबूझ से तीन महत्त्वपूर्ण उत्सव शुरू हुए, पर आचार्यों का जन्म दिवस नहीं मनाया जाता था। वि०सं० २०१० में जोधपुर चतुर्मास में स्थानीय प्रबुद्ध लोगों ने गुरुदेव से जन्म दिवस मनाने की सहमति ली और बोले। अच्छी प्रस्तुतियाँ हुई तो गुरुदेव को लगा कि इस दिन को निमित्त बनाकर हमारे साधु-साध्वियाँ भी बोलने-लिखने में गति कर सकते हैं। तो इस क्रम को चलाना चाहिए।

उसके बाद गुरुदेव का जन्म दिन मुंबई में सामान्य रूप में मनाया गया। गुरुदेव जन्मदिन पर कुछ संकल्प रूप में नए-नए प्रयोग करते थे। उस दिन कार्यक्रम लंबा चला था तो गुरुदेव ने एक प्रयोग किया था–२१ घंटे का मौन। उसके बाद अनेक रूपों में जन्म दिन मनाया जाने लगा। अणुव्रत आंदोलन से तेरापंथ की ख्याति बढ़ी। अनेक संप्रदाय के लोग संपर्क में आए, प्रभावित भी हुए।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि आज के दिन मुझे वह दृश्य आँखों के सामने दिखाई दे रहा है, जिस दिन हम एक नए मार्ग पर अग्रसर हो रहे थे। हमें कुछ दिखाई नहीं दे रहा था कि हमें किस मार्ग में आगे बढ़ना है। हमारे लिए आधार थे हमारे गुरुदेव। उन्होंने जैसा मार्ग-दर्शन हमें दिया, उस मार्ग पर आगे बढ़ते रहें, चलते रहें।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
15 - 21 नवंबर, 2021

✦ *उपदेश सुनने की भावना भी अच्छी बात है। उपदेश की सौ बातें सुनी जाएँगी तो उसमें से दो-चार बातें जीवन में हृदयंगम भी हो सकती हैं, उतर भी सकती हैं।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

धनतेरस, रूपचतुर्दशी और बड़ी दीक्षा का आयोजन

साधुत्व के तेरह नियम तेरह करोड़ से अधिक मूल्यवान हैं : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, ३ नवंबर, २०२१

मर्यादा-पालन में सतत् जागरूक आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अमृत देशना प्रदान कराते हुए फरमाया कि सप्ताह पूर्व मैंने एक बहन को सामायिक चारित्र ग्रहण करवाया था। आज उस साध्वी की बड़ी दीक्षा-छेदोपस्थापनीय चारित्र स्वीकरण की प्रक्रिया संपन्न करने का उपक्रम उपस्थित है।

पूज्यप्रवर ने नवदीक्षित साध्वी रोहिणीप्रभा जी को पाँच महाव्रतों और रात्रि भोजन विरमण व्रत का विस्तार से समझाकर छेदोपस्थापनीय चारित्र स्वीकार करवाया।

मुख्य प्रवचन में पूज्यप्रवर ने फरमाया कि सूयगड़ो आगम में शास्त्रकार ने साधु के लिए निर्देश दिया है कि तीन स्थानों में साधु संयत रहे। वे हैं—ईर्या समिति, आसन-शयन और भक्त पान। साधु चलने में जागरूक रहे, अहिंसा का ध्यान रहे। चलते-चलते साधु बात न करे। बात करने से रास्ता आसानी से कट सकता है, पर कर्म आसानी से नहीं कटेंगे।

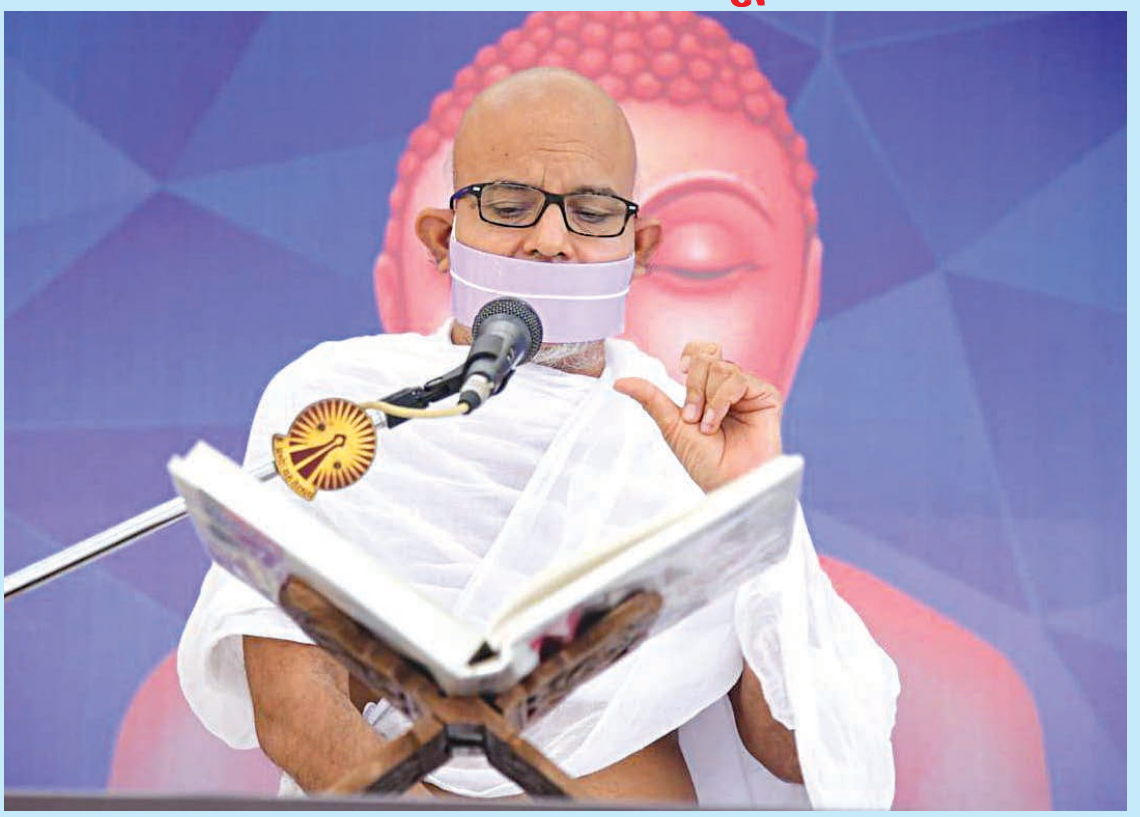

कर्म काटने के लिए चलने में हमें ध्यान देना होगा। साधु शरीर-प्रमाण भूमि देखकर चले कि रास्ते में किसी प्रकार की हिंसा न हो जाए। साधु संयत रहे। चलना भी हमारी साधना है। आसन-शयन संयत आदान निक्षेप समिति का ही अंग है। आसन-शयन के प्रतिलेखन आदि के प्रति भी साधु जागरूक रहे। अनावश्यक संग्रह साधु न करें।

भक्तपान यानी ऐषणा समिति में सावधान। साधु ऐषणा समिति में जागरूक रहे। गवेषणा ठीक कर लें, संकेत करने से साधु बचने का प्रयास करें। सहज जो सुलभ हो, अपेक्षानुसार लें। गवेषणा में भी जागरूक रहे। विधि जो है, उसमें जागरूक रहे।

साधु मान, क्रोध, माया और लोभ से भी दूर रहे। इनका विवेक करे। योग रूप में कषाय प्रवर्जनीय है। साधु में भद्रता रहे, छल कपट न रहे। कुल सात बातें इस सूत्र में समझायी गई है। शिक्षाएँ दी गई हैं। नव दीक्षितों में ज्ञान का, सेवा भावना का विकास होता रहे।

साधु के लिए स्वाध्याय एक खुराक है। हम हर चर्या में जागरूक रहें। यह हमारे लिए कर्तव्य है।

आज चतुर्दशी है, आज हाजरी का क्रम है। पूज्यप्रवर ने हाजरी का वाचन करते हुए मर्यादावली का वाचन किया। हमारे तेरह नियम तेरह करोड़ की संपत्ति है। हमारी संघीय मान्यता सबके लिए एक समान है। साधु-साध्वियों को प्रेरक प्रेरणाएँ प्रदान करवाई।

नवदीक्षित साध्वी रोहिणीप्रभा जी ने लेख-पत्र का वाचन किया। पूज्यप्रवर ने कल्याणकों की बख्शीश करवाई। मुनि धर्मरुचि जी स्वामी ने नव दीक्षित साध्वीजी को मंगलकामना प्रेषित करावाई। नवदीक्षित साध्वी जी ने साधुओं को वंदना की। चारित्रात्माओं ने सामुहिक लेख-पत्र का वाचन किया।

पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि आज धनतेरस है। आज से दीपावली पर्व की शुरुआत हो जाती है। हर व्यक्ति समृद्ध बनना चाहता है। धन तेरस के महत्त्व को समझाया। आज के ही दिन भरत चक्रवर्ती को तीन-तीन बधाइयाँ प्राप्त हुई थीं। हमारे लिए यह आध्यात्मिक और प्रकाश का पर्व है।

साध्वीवर्या जी ने कहा कि इस संसार में कहीं वियोग का तो कहीं संयोग का दुःख है। दुःख के कई कारण हो सकते हैं। दुःख का सबसे बड़ा हेतु है—इच्छाएँ, कामनाएँ। इच्छाएँ सुख का कारण भी हो सकती हैं। भौतिक सुख पाने की इच्छा दुःख का कारण है।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

मोक्ष रूपी मंजिल पाने के लिए सत्पुरुषार्थ करते रहें : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, ५ नवंबर, २०२१

अंतर की प्यास को बुझाने वाले, परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने गुजराती नववर्ष-बेसता वर्ष के उपलक्ष्य में प्रातः ५:१५ पर विशेष मंगलपाठ की कृपा करवाई। कला रात्रि में दीपावली पर्व के उपलक्ष्य में भी सायं लगभग ७:१५ पर विशेष मंगलपाठ की कृपा करवाई थी। सभी के आध्यात्मिक विकास की मंगलकामना प्रेषित करवाई थी।

अमृत देशना प्रदान करते हुए महामनीषी ने फरमाया कि सूयगड़ो आगम में साधु के लिए बताया गया है—साधु क्या करे और साधु कैसा होना चाहिए? इन दो बातों की जानकारी प्रस्तुत श्लोक से प्राप्त की जा सकती है। साधु समिति युक्त होना चाहिए। पाँच समितियों से युक्त होना चाहिए। पाँच समितियों की साधना करने वाला होना चाहिए।

जो प्राणियों की हिंसा न करे, वह समित कहलाता है। पाँच समितियाँ—इर्या, भाषा, ऐषणा, आदान निक्षेप और उत्सर्ग है। ये समितियाँ अहिंसा से जुड़ी हुई है। समितियाँ तो सहायक है, पर मूल चीज है कि साधु पाँच संवरों से संवृत्त होना चाहिए। अयोग संवर तो साधु में चौदहवें गुणस्थान में ही उपलब्ध होता है। चौदहवाँ गुणस्थान हुआ और सिद्धि प्राप्त हो जाती है। पाँच महाव्रत पाँच संवर है।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

अहिंसा की ज्योति से हिंसा के अंधकार को दूर करें : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, १ नवंबर, २०२१

तेरापंथ के राम आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि सूयगड़ो आगम में अहिंसा की दृष्टि से यहाँ दो बातें सामने आती हैं। पहली बात है कि कोई भी जीव दुःख नहीं चाहता, इसलिए सब जीव अहिंस्य हैं। मारने योग्य नहीं हैं।

दूसरा प्रश्न पैदा होता है कि दुःख पैदा कौन करता है? दुःख जीव स्वयं अपने प्रमाद के कारण उत्पन्न कर लेता है। दुःख का निर्जरण-भेदन कैसे हो? अप्रमाद में रहो, फिर दुःख समाप्त हो सकेगा। दुःख किसी प्राणी को प्रिय नहीं होता है। कहा गया है कि विपत्तियाँ जीवन में आएँ। विपत्ति आने से प्रभो आपकी याद आ जाती है। आपके जितने दर्शन होंगे, हम मोक्ष की दिशा में आगे बढ़ेंगे।

शास्त्र में कहा गया है कि ज्ञानी होने का एक सार यही है कि किसी की हिंसा न करना। अहिंसा के पथ पर चलने का प्रयास करो, समता को देखो कि मुझे दुःख अप्रिय है, तो इनको भी दुःख अप्रिय है। मुझे सुख प्रिय है, तो इनको भी सुख प्रिय है। मैं मरना नहीं चाहता तो ये भी मरना नहीं चाहते। मैं जीना चाहता हूँ तो ये भी जीना चाहते हैं।

धार्मिक-जगत का अत्यंत प्रसिद्ध शब्द है—अहिंसा। अहिंसा को परम धर्म कहा गया है। हिंसा और अहिंसा हमारी आत्मा में है। यह निश्चय की बात है। जो अप्रमत्त होता है, वह अहिंसक है। जो प्रमत्त है, वह हिंसक होता है। वीतराग, अप्रमत्त चेतना वाले से चलते हुए कोई हिंसा भी हो जाए तो वह भाव हिंसा नहीं है, उसे पाप नहीं लगेगा। कारण अहिंसा तो भीतर है, वो तो राग-द्वेष मुक्त है। उसने प्रयास करके नहीं मारा है। अगर उस समय वीतराग शुभ योग में है, तो उसके पुण्य कर्म का बंध होगा।

शिकारी ने शिकार करने के लिए बाण चलाया पर निशाना नहीं सधा, जीव नहीं मरा तो भी उस शिकारी के तो पाप का बंध हो गया, कारण उसके मन में हिंसा का भाव है। हिंसा भी आत्मा में ही है। जीव न मरने पर भी पाप लग जाना और मर जाने पर भी पाप लग जाना यह सारी बात हिंसा-अहिंसा की अपने भीतर ही है।

द्रव्य हिंसा और भाव हिंसा। आचार्य भिक्षु ने कहा है कि जीव अपने आयुष्य बल से जीते हैं, उसमें हमारी दया-अहिंसा की बात नहीं है। आयुष्य की संपूर्ति से जीव मरते भी हैं, तो उसका पाप हमें नहीं। जो मारता है, वो पाप का भागीदार बनता है। नहीं मारने का जो संकल्प है, वो दया है। वो गुणों की खान है।

आदमी जितना हिंसा का परित्याग करे, अहिंसा की दिशा में आगे बढ़ सकता है। मांसाहार हिंसा है, यह एक प्रसंग से समझाया कि कथनी-करनी में अंतर न हो। आदमी को एक पाप छिपाने के लिए दूसरा पाप करना पड़ जाता है। दुनिया में हिंसा है, तो अहिंसा भी है। जहाँ हिंसा है, वहाँ अहिंसा का दीप जलाओ।

टिमटिमाते बाहर के दीये भी अच्छे लगते हैं, अहिंसा का दीया भी जलता रहे। अहिंसा की अखंड ज्योति जले। भारतीय संस्कृति में यदा-कदा ऐसे त्योहार भी आते रहते हैं। पर्व से आमोद-प्रमोद के साथ प्रेरणा का भी प्रसंग बन सकता है।

शास्त्रकार ने कहा है कि ज्ञानी के ज्ञान का सार है कि वह अहिंसा की आराधना करने का प्रयास करे। हिंसा से विरत रहने का प्रयास करे। यह अहिंसा की ज्योति हमारे भीतर में रहे। यह ज्योति हिंसा के अंधकार को दूर करने वाली सिद्ध हो सकती है।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि गुरु का नाम लेकर कार्य करने से असंभव कार्य भी संभव बन जाता है। जो विनीत शिष्य होता है, वह गुरु से ज्ञान प्राप्त कर लेता है, वह सही ज्ञान होता है। अविनीत शिष्य अगर ज्ञान भी प्राप्त कर लेता है तो भी वह ज्ञान का सही प्रयोग नहीं करता है।

साध्वी जागृतयशा जी ने गीत की प्रस्तुति दी।

अमिता बाबेल, उमराव सिंह संचेती, प्रकाश सुतरिया ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। चतुर्मास का जो स्थल है, वो प्रायः-प्रायः उमराव सिंह-आदित्य संचेती का है। व्यवस्था समिति द्वारा उनका सम्मान किया गया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

व्यक्ति संयम की चेतना को पुष्ट करने का प्रयास करे : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, २ नवंबर, २०२१

अध्यात्म साधना के धनी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि सूयगड़ो आगम में कहा गया है—संयमी व्यक्ति धर्म में स्थित रहे। किसी भी इंद्रिय-विषय में आसक्त न बने। आत्मा का संरक्षण करें और जीवन-पर्यन्त चर्या आसन, शैय्या और भक्त-पान के विषय में होने वाले असंयम से अपने आपको बचाएँ।

साधु का जीवन तो धर्म के लिए समर्पित होना चाहिए। धर्म में स्थित रहे और अपनी साधना में स्थित रहे, महाव्रतों के प्रति जागरूक रहे।

धर्म में स्थित रहना है, तो इंद्रिय-विषयों से अनासक्त रहना भी अपेक्षित है। धर्म और विषयासक्ति इन दोनों में विरोध है। धर्म रहेगा या विषयासक्त रहेगा। धर्म में स्थित होने वाला अपने आपमें स्थित हो सकता है। एक प्रसंग से समझाया कि साधक तो ठहरा हुआ ही रहता है। साधु तो आत्मस्थ होता है। साधु की साधनासिक्त करुणामयी वाणी से किसी का भला हो सकता है।

साधु के तो दर्शन ही पुण्य होते हैं। साधु तो जंगम चलते-फिरते तीर्थ होते हैं। शब्द, रूप, गंध, रस और स्पर्श इनकी आसक्ति में आदमी संलग्न हो जाता है तो आत्मा से मानो दूर हो जाता है। इंद्रिय-विषय आत्मा के लिए खतरा है, इसलिए इनसे आत्मा की रक्षा करो। असंयम से अपने आपको बचाओ। संयम है, तो आत्मा की रक्षा है। इसके लिए शास्त्रों में कछुए का उदाहरण दिया गया है। तिर्यन्च जीवों से भी आंशिक शिक्षा ली जा सकती है।

आदमी को शिक्षा जहाँ से मिले, ले लेनी चाहिए। संयम का अपना महत्त्व होता है। साधु तो भक्तपान के असंयम से बचे ही, गार्हस्थ्य में भी भक्त पान के असंयम से बचने का प्रयास करे। श्रावक गृहस्थ जितना त्याग करेगा, विरति संवर होता रहेगा। अनेक रूपों में त्याग किया जा सकता है।

आदमी वाणी का भी संयम करे। बिना आधार बात मत लिखो। बोलने में भी आधार चाहिए। हम अपने जीवन में संयम की चेतना को यथोचित्य पुष्ट करने का प्रयास करें, यह काम्य है। पूज्यप्रवर ने दिपावली पर तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि सेवा करने में जिगुत्सा के भाव आ जाते हैं, तो वहाँ व्यक्ति सेवा नहीं कर सकता। सेवा तो आग्लान भाव से होती है। सेवा के महत्त्व को समझाया। सेवा करने वाला व्यक्ति प्रशंसा का पात्र बनता है। राग-द्वेष से मुक्त हो सेवा करें। सेवार्थी की अपेक्षानुसार साधु सेवा करें। उसकी चित्त-समाधी बनाए रखने का प्रयास करें।

साध्वी केवलयशा जी ने गीत के माध्यम से अपनी भावना अभिव्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

विशिष्ट संपदाओं के धनी थे गणाधिपति...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

साध्वीवर्या जी ने कहा कि जीवन में सफलता के लिए तीन बातों की आवश्यकता होती है—आशीर्वाद, संकल्पशक्ति और पुण्याई। जिस व्यक्ति में इन तीनों का योग होता है, सफलता उसके दरवाजे पर दस्तक देती है। ये तीनों बातें हम देखें तो आचार्यश्री तुलसी के जीवन में पूर्णतः घटित होती है।

मुख्य मुनिप्रवर ने कहा कि परमपूज्य गुरुदेव तुलसी का परिचय एक अत्यंत विराट व्यक्तित्व था। मानव के भगवान बनकर इस धरती पर आए थे। उन्होंने अणुव्रत धर्म के माध्यम से पूरे विश्व को मानव धर्म दिया था। उनका जीवन पुरुषार्थ की एक महनीय गौरव गाथा है। सुमधुर गीत का संगान किया। मुनि मनन कुमार जी जो अणुव्रत के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक हैं, ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

समणीवृंद ने समूह गीत की प्रस्तुति दी।

अणुव्रत विश्व भारती के संचय जैन ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। ममता प्रकाश बुरड़ ने १६ की तपस्या के प्रत्याख्यान पूज्यप्रवर से लिए। अणुव्रत के संकल्प शृंखला अणुव्रत क्रिएटिवीटी कोंटेस्ट, नशामुक्ति व जीवन-विज्ञान दिवस पोस्टर श्रीचरणों में दिखाए गए। अणुव्रत समिति, भीलवाड़ा के उपाध्यक्ष लक्ष्मीलाल झाबक ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

मोक्ष रूपी मंजिल पाने के लिए...

(पृष्ठ २ का शेष)

पाँच महाव्रतों में विशेषतया अहिंसा पालन में पाँच सुरक्षाकर्मी तैनात किए गए हैं। पाँच समितियाँ सुरक्षाकर्मी हैं। साधु को भी सुरक्षा चाहिए। कई बार मिथ्या-दंड भी मिल सकता है। अपराधी छूट जाता है। साधु भी श्रावकों के समाज में रहता है। गृहस्थ तो परिवार, समाज से बँधे हुए होते हैं। साधु अप्रतिबद्ध रहे, आसक्ति में न जाएँ, अनासक्त रहे। साधु अंतिम समय तक मोक्ष के लिए साधना करता रहे।

भगवान महावीर का परिनिर्वाण हुआ था, पर उसके लिए उन्होंने कितना पुरुषार्थ किया था। अनेक जन्मों तक पुरुषार्थ-साधना की। करते-करते एक समय में काम हो गया और मुक्ति प्राप्त हो गई। कार्तिक अमावस्या की रात्रि में परम प्रभु की आत्मा इस नश्वर देह से मुक्त हो गई। गौतम स्वामी को भी आलोक मिल गया। भगवान के वे प्रमुख शिष्य गणधर थे पर भगवान की विद्यमानता में उनको कैवल्य प्राप्त नहीं हुआ। पर उनका सान्निध्य उन्हें बहुत प्राप्त हुआ। भगवान महावीर की मुक्ति मानो गौतम स्वामी की राग मुक्ति में कारण बन गई।

अमोक्ष-अंतिम क्षण तक साधु अप्रतिबद्ध रहता हुआ मोक्ष के लिए परिवर्जन-पुरुषार्थ करता रहे। साधु तो करे ही, आप लोग गृहस्थ है, उनको भी जितना हो सके, अपनी सीमा में पुरुषार्थ कर सकता है। गृहस्थ भी आगे बढ़ सकता है। गृहस्थ में रहते हुए भी चेतना का तादात्म्य मोक्ष के साथ जुड़ जाए कि मोक्ष के लिए मैं कुछ करूँ। इस जन्म में नहीं तो आगे भी मोक्ष तो मिल सकेगा। हम अध्यात्म और मोक्ष की साधना के लिए सत्-पुरुषार्थ करते रहें, जब तक मंजिल न मिल जाए, यह काम्य है।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि स्वाध्याय के समान कोई भी तप नहीं है। स्वाध्याय यानी जो श्रुत धर्म है। सामायिक से लेकर द्वादशांग आगमों का परिशीलन करना भी स्वाध्याय के अंतर्गत आता है। प्रवचन यानी श्रुत रूपी धर्म है, वही वास्तव में स्वाध्याय के रूप में माना जाता है। स्वयं का जो अध्ययन करता है, वो वास्तव में स्वाध्याय कहलाता है। पुस्तकों के पठन को भी स्वाध्याय कहा गया है।

मनन आच्छा ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

महिला मंडल के विविध आयोजन

महाप्रज्ञ पब्लिक स्कूल में दंपति शिविर का आयोजन

मुंबई।

साध्वी विद्यावती जी के सान्निध्य में महाप्रज्ञ पब्लिक स्कूल, दक्षिण मुंबई में दंपति शिविर एवं तप अभिनंदन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। तेममं के मंगलाचरण के पश्चात आचार्य महाप्रज्ञ विद्या निधि फाउंडेशन एवं तेरापंथी सभा के कोषाध्यक्ष प्रकाश सिसोदिया ने आगंतुक दंपतियों का एवं तपस्वी भाई-बहनों के प्रति स्वागत वक्तव्य दिया। तेरापंथी सभा के अध्यक्ष गणपतलाल डागलिया, तेयुप के अध्यक्ष पूरण चपलोत, तेमम की संयोजिका प्रीति डागलिया ने शुभकामनाएँ प्रस्तुत की। अभातेयुप के कार्यकारिणी सदस्य देवेंद्र डागलिया एवं रवि दोशी ने दंपति शिविर की महत्ता बताते हुए तपस्वियों की हिम्मत को साधुवाद दिया।

नितेश हिना धाकड़, देवेंद्र प्रीति डागलिया, अशोक रेखा बरलोटा, हस्ती सविता कच्छारा, नीलेश भावना धाकड़, पवन रेणु बोलिया, पूरण राखी चपलोत, मूलचंद रेखा बरलोटा, दिनेश शर्मिला धाकड़ एवं सविता एवं भावना धाकड़ ने सुमधुर गीत प्रस्तुत किए। साध्वी ऋद्धियशा जी ने वक्तव्य, साध्वी मदुयशा जी ने कविता एवं साध्वी प्रेरणाश्री जी ने संगीत को स्वर दिया। साध्वी प्रियंवदा जी ने तपस्या के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए सुखी दांपत्य जीवन के कुछ टिप्स पर विचार प्रकट किए। इस शिविर में ४२ दंपतियों ने सहभागिता की।

शासनश्री साध्वी विद्यावती जी ने कहा कि दंपति अगर दांपत्य जीवन को सुंदर बनाना चाहते हैं तो गलतफहमी एवं अविश्वास से बचें। धैर्य एवं संयम से दांपत्य जीवन में सुख-शांति के फूल खिल सकते हैं। सभी तपस्वियों को स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया गया।

शिविर में अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की अच्छी संख्या में उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन दिनेश एवं शर्मिला धाकड़ ने संयुक्त जोड़े से किया। आभार ज्ञापन तेयुप मंत्री रौनक धाकड़ ने किया।

दंपति सेमिनार का आयोजन

अहमदाबाद।

तेमम एवं तेयुप के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित दाम्पत्य सेमिनार का आयोजन तेरापंथ भवन, शाहीबाग में किया गया। सेमिनार का शुभारंभ साध्वीश्री जी द्वारा नमस्कार महामंत्र द्वारा किया गया। तेमम की बहनों ने संगीतमय मंगलाचरण प्रस्तुत किया। तेमम अध्यक्ष चांद छाजेड़ व तेयुप अध्यक्ष ललित बैगवानी ने सदन का आत्मीय भाव से स्वागत किया। शासनश्री साध्वी सरस्वती जी ने ऊर्जा का सिंचन करते हुए दंपति जीवन किस प्रकार खुशहाल रहे उस पर सुंदर तरीके बताए।

साध्वी परमार्थप्रभा जी ने साहस की कहानी के ऊपर वक्तव्य दिया। साध्वी नंदिताश्री जी ने जीवन कैसे सुभाषित हो, इसके गुर बताए। साध्वी तरुणप्रभा जी ने परिवार क्या है, समझाया। साध्वी सम्यक्त्वप्रभा जी ने संयम पर्याय के ५० वर्षों का अनुभव बताया। प्रथम सत्र का संचालन तेयुप मंत्री कपिल पोखरना व महिला मंडल मंत्री अनिता कोठारी ने नए अंदाज में प्रेस रिपोर्टर की भूमिका में किया। सेमिनार के दूसरे सत्र का शुभारंभ कार्यक्रम के प्रायोजक धनराज रमेश कुमार तातेड़ व नरेंद्र, राजेंद्र कच्छारा परिवार का सम्मान के साथ हुआ।

मुख्य वक्ता श्वेता मोदी के द्वारा सुंदर प्रस्तुति दी गई। साथ ही उनका साहित्य के द्वारा सम्मान किया गया। कार्यक्रम में रोचक गेम का आयोजन भी किया गया, जिसमें प्रथम, द्वितीय आने वालों को पुरस्कृत किया गया। Early bird, Lucky draw रखा गया।

कार्यक्रम का आभार महिला मंडल सहमंत्री संगीता चोपड़ा ने किया। द्वितीय सत्र का संचालन अर्पित मेहता व निशु मेहता ने सजोड़े से किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में संयोजक मीना कोठारी, संगीता चोपड़ा, टीना छाजेड़, अर्पित मेहता, मनोज सिंघी, रोहित संकलेचा का पूर्ण सहयोग रहा। कार्यक्रम में लगभग ३८० उपस्थिति रही।

स्वस्थ जीवनशैली कार्यशाला

नोहर।

स्थानीय तेरापंथ भवन, उपासरा में तेरापंथ महिला मंडल के तत्त्वावधान में स्वस्थ जीवनशैली कार्यशाला का आयोजन किया गया। शासनश्री मुनि विजय कुमार जी ने कहा स्वस्थ जीवन जीना मनुष्य की बहुत बड़ी उपलब्धि है। जीवन स्वस्थ है तो आदमी मस्त है, नहीं तो वह सोचता है, सब कुछ होते हुए भी मेरा सितारा अस्त है। स्वस्थ जीवन सबसे बड़ी संपदा है। यह संपदा जिसे प्राप्त है, वह जीवन के हर क्षेत्र में आगे बढ़ सकता है। सफलता को हासिल कर सकता है। जीवनी शक्ति मजबूत बनाने के लिए खान-पान की शुद्धि के साथ ही स्वास्थ्य की सर्वांग संपन्नता पर ध्यान देना जरूरी है।

कार्यक्रम का प्रारंभ तेरापंथ महिला मंडल की बहनों के मंगल गीत से हुआ। अध्यक्ष पद पर बोलते हुए डॉ० चंद्र ने व्यक्ति की प्रशस्त दिनचर्या व समय के सदुपयोग के बारे में बताया। विशिष्ट अतिथि डॉ० आदित्य ने खान-पान की शुद्धि व मात्रा पर विचार प्रकट किए। सुशील सिपानी ने आगंतुकों का परिचय दिया व मुनिश्री का आभार प्रकट किया।

आयोजक महिला मंडल ने दोनों डॉक्टरों को साहित्य भेंट करके सम्मानित किया। महिला मंडल प्रधान किरण देवी ने अच्छी प्रस्तुति के लिए ज्ञानशाला के बच्चों को प्रोत्साहित किया। संयोजन कन्या मंडल की संयोजिका नीरू छाजेड़ ने किया।

उपासक श्रेणी साधना की ओर अग्रसर

गंगाशहर।

गुरुदेव तुलसी का धर्मसंघ को एक महान अवदान—उपासक श्रेणी। परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण जी की असीम अनुकंपा से, साध्वी पावनप्रभा जी के सान्निध्य और जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा के तत्त्वावधान में गंगाशहर के नैतिकता शक्तिपीठ-आचार्य तुलसी समाधि स्थल परिसर में उपासक साधना केंद्र का शुभारंभ उपासक श्रेणी के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि योगेश कुमार जी की प्रेरणा से हुआ।

कल प्रात: साध्वी पावनप्रभा जी के सान्निध्य में औपचारिक रूप में सेवा केंद्र-शांति निकेतन में प्रोग्राम आयोजित हुआ। मुख्य कार्यक्रम आज आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान परिसर में साध्वीश्रीजी के सान्निध्य में प्रारंभ हुआ। साध्वीश्री जी ने कहा कि उपासक स्व-पर का कल्याण करने वाले हैं। उपासक साधना केंद्र से स्थानीय श्रावक भी लाभ उठा सकते हैं।

उपासक गीत द्वारा उपासक वर्ग ने मंगलाचरण किया। संस्थान के मंत्री हंसराज डागा ने सभी का स्वागत किया व गुरुदेव के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। उपासक राजेंद्र सेठिया ने कहा कि उपासक श्रेणी में अभी भी विकास का अवकाश अवशेष है। उपासक श्रेणी के राष्ट्रीय संयोजक सूर्यप्रकाश सामसुखा ने उपासक श्रेणी की महत्ता पर प्रकाश डाला। उपासक प्राध्यापक निर्मल नौलखा ने कहा कि जागना जरूरी है, जो सोता है, वो खोता है।

कृतज्ञता किशनलाल बैद ने ज्ञापित की। प्रथम चरण में १० उपासक-उपासिकाओं ने भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन राजेंद्र पारख ने किया।

प्रेक्षाध्यान स्वस्थ जीवन की अमूल्य औषध है

बोलाराम।

तेरापंथ सभा द्वारा तेरापंथ भवन में आयोजित कार्यशाला को संबोधित करते हुए साध्वी काव्यलता जी ने कहा कि दुनिया में जीने वाले हर व्यक्ति की भावना रहती है स्वस्थ व मस्त, प्रसन्न रहूँ। इसके लिए योगी पुरुष आचार्य महाप्रज्ञ जी ने प्रेक्षाध्यान के माध्यम से कुछ मंत्र, यौगिक क्रियाएँ, आसन, प्राणायाम जनता के सामने दिए।

साध्वी सुरभिप्रभा जी ने ध्वनि के विविध प्रकार बताते हुए ओम अर्हम्, महाप्राण ध्वनि करवाई। साध्वी ज्योतियशा जी ने आकाश दर्शन समवृत्ति श्वास प्रेक्षा, कायोत्सर्ग आदि अनेक प्रयोग करवाए। अध्यात्म एवं मानसिक प्रसन्नता के लिए सूर्योदय के साथ उगते हुए सूर्य पर अरुण रंग का ध्यान करने से उसमें विकास संभव है।

कार्यशाला में तेयुप सहमंत्री नीरज सुराणा, टीपीएफ सदस्य शिखा सुराणा, महिला मंडल मंत्री स्नेहा बांठिया, तेयुप सदस्य राहुल सुराणा, विनीता लूनावत, विनीत लुणावत, तेरापंथ सभा से पवन बांठिया, पदम बांठिया, राजेश लुणावत, गौतम कात्रेला, राहुल कोठारी आदि ने विशेष प्रयोग कर अपनी प्रसन्नता जाहिर की।

मेगा दंत चिकित्सा शिविर

रायपुर।

रायपुर के गुढ़ियारी स्थित मारुति मंगलम भवन में छत्तीसगढ़ स्तरीय श्रावक सम्मेलन का आयोजन मुनि दीपकुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा द्वारा किया गया, जिसमें टीपीएफ के सहयोग से तेयुप द्वारा मेगा डेंटल चेकअप कैंप का आयोजन किया गया। जिसमें ७० लोगों ने लाभ प्राप्त किया। कैंप सहयोगी सदस्य अर्पित गोखरू, यश डूंगरवाल, कुणाल डागा थे।

ज्ञानशाला प्रशिक्षक परीक्षा

बैंगलोर, गांधीनगर।

साध्वी लावण्यश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में ज्ञानशाला प्रशिक्षक बहनों की लिखित परीक्षा का आयोजन किया गया। साध्वी लावण्यश्री जी के मंगलपाठ से परीक्षा का शुभारंभ हुआ।

१२ प्रशिक्षक बहनें इस परीक्षा में संभागी बने। सभा अध्यक्ष सुरेश दक, आंचलिक संयोजक मानक संचेती, सह-संयोजक सुरेश नाहर, क्षेत्रीय संयोजिका नीता गादिया, मुख्य प्रशिक्षिका मंजु गन्ना की उपस्थिति में हस्ताक्षर करते हुए परीक्षा का शुभारंभ हुआ। इस अवसर पर साध्वी दर्शितप्रभा जी, साध्वी सिद्धांतश्री जी का सान्निध्य प्राप्त हुआ।

योगक्षेम — अभातेयुप योगक्षेम योजना

सत्र 2021-23

❋ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
❋ श्री अशोक श्रेयांस बरमेचा, तारानगर-हैदराबाद	11,00,000
❋ श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर	5,00,000
❋ श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना	5,00,000
❋ श्री राकेश कठोतिया, लाडनूं-मुंबई	5,00,000
❋ श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई	5,00,000
❋ श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा	5,00,000
❋ श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत	5,00,000
❋ श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई	5,00,000
❋ श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई	5,00,000

भाग्योदय - हमारा भाग्य हमारा परिवार कार्यशाला

सिकंदराबाद।

साध्वी काव्यलता जी के सान्निध्य में 'भाग्योदय' हमारा भाग्य हमारा परिवार कार्यशाला का आयोजन तेयुप, हैदराबाद द्वारा वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, बोलाराम में किया गया। सर्वप्रथम तेयुप अध्यक्ष प्रवीण श्यामसुखा ने इस कार्यशाला में पधारे हुए सभी महानुभावों का स्वागत किया।

हमारा भाग्य हमारा परिवार कार्यशाला में साध्वी काव्यलता जी ने कहा कि शांत, स्वस्थ और समृद्ध परिवार के लिए जरूरी है परिवार के हर सदस्य तीन शब्दों को अपने जीवन का अंग बनाएँ—प्लीज, थैंक्यू व सॉरी। आपसी वैमनस्य को दूर करने के लिए जरूरी है स्वार्थी मनोवृत्ति का त्याग एवं अहंकार का विसर्जन।

साध्वीश्री जी ने आगे कहा कि कार्यक्रम में साध्वी मधुस्मिता जी ने जिस कृपा की वर्षा कर अपने प्रतिनिधि के रूप में साध्वी सहजयशा जी व साध्वी मल्लिप्रभा जी को १० किलोमीटर की पदयात्रा करवाकर यहाँ भिजवाया। यह धर्मसंघ की प्रभावना का अद्‌भुत नमूना है। साध्वी मधुस्मिता जी द्वारा भेजी गई शुभकामनाओं का वाचन व गीतिका का संगान साध्वीवृंद द्वारा किया गया। साध्वी काव्यलता जी, साध्वी ज्योतियशा जी व साध्वी सुरभिप्रभा जी ने सुंदर संरचना के साथ कार्यक्रम को आयोजित किया।

इससे पूर्व भाग्योदय कार्यशाला के मुख्य अतिथि अशोक बरमेचा अध्यक्ष जैन सेवा संघ का परिचय ऋषभ कातरेला ने दिया। तेरापंथ सभा, सिकंदराबाद के अध्यक्ष सुरेश सुराना ने नगरत्रय की सभी संस्थाओं की ओर से, तेरापंथ सभा, बोलाराम के अध्यक्ष रतन सुराणा, बोइनपल्ली चातुर्मास संयोजक सतीश दुगड़ व स्थानकवासी संप्रदाय की उपाध्यक्ष सुदेश जैन ने कार्यक्रम की सफलता के लिए शुभकामनाएँ प्रेषित की।

भाग्योदय कार्यशाला के मुख्य वक्ता निर्मल सिंघवी का परिचय तेयुप सहमंत्री नीरज सुराना ने दिया। कार्यक्रम के संयोजक मनीष पटावरी, नीरज सुराना, ऋषभ कातरेला के अथक प्रयासों से सफलतम बना। टीम तेयुप के सहमंत्री अनिल दुगड़ सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों का कार्यक्रम की सफलता में विशेष योगदान रहा। कार्यक्रम का संचालन साध्वी ज्योतियशा जी ने किया। कार्यक्रम में अनेक सभा-संस्थाओं के पदाधिकारीगण उपस्थित रहे।

आवेश प्रबंधन कार्यशाला का आयोजन

हैदराबाद।

साध्वी निर्वाणश्री जी ने ज्ञानबाग कॉलोनी में आयोजित कार्यशाला में कहा—आवेश वर्तमान युग की एक जटिल समस्या है। बच्चों से लेकर बड़ों तक सब इससे आक्रांत हैं। क्रोध प्रीति का नाशक है। इससे व्यक्ति के दिव्य गुण तिरोहित हो जाते हैं। हम क्रोध को सफल न होने दें। जब-जब क्रोध सफल होता है दुःख की परंपरा बढ़ जाती है। भगवान महावीर ने क्रोध के विफलीकरण के लिए उपशम/क्षमा/सहिष्णुता की साधना पर अत्यधिक बल दिया। साध्वीश्री जी ने क्रोध से विमुक्ति के लिए श्वेतरंग के ध्यान एवं अनुप्रेक्षा का प्रयोग विशेष रूप से करवाया।

कार्यशाला की मुख्य वक्ता साध्वी योगक्षेमप्रभा जी ने कहा कि क्रोध संबंधों की समरसता को लील जाता है। यह अग्नि की तरह सर्वगुणों का नाशक है। तत्काल क्रोध के आवेग रोकने के लिए कुछ उपाय इस प्रकार किए जा सकते हैं। व्यक्ति मौन धारण कर लें। स्थान छोड़ दें। श्वास संयम करें। ॐ का लयबद्ध जप करे।

साध्वीवृंद की समवेत स्वर लहरी ने वातावरण को संगीतमय बना दिया। आगापुरा ज्ञानशाला के बच्चों, आयुष, लक्ष्य, हार्दिक ने बालसुलभ नाटिका का अभिनय किया। संगीता बोरड़ एवं खुशबू दुगड़ का विशेष सहयोग रहा। आगापुरा क्षेत्र की कन्याओं की प्रस्तुति ने श्रोताओं का मन मोह लिया। साध्वी लावण्यप्रभा जी ने मंच संचालन किया एवं प्रमोद भंडारी ने कार्यक्रम की समायोजना के लिए आभार व्यक्त किया।

मानवता के मसीहा थे आचार्यश्री तुलसी

डी०वी० कॉलोनी।

शासनश्री साध्वी जिनरेखा जी के सान्निध्य में आचार्यश्री तुलसी का १०८वाँ जन्म दिवस अणुव्रत दिवस के रूप में मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल के मंगल गीत से हुआ। शासनश्री साध्वी जिनरेखा जी ने कहा—आचार्यश्री तुलसी जन्म से महान थे। आचार्यश्री तुलसी संपूर्ण श्रमण परंपरा के अद्वितीय तेज पुंज थे। आपके तेजस्वी, ओजस्वी, वर्चस्वी व्यक्तित्व ने जैन धर्म को व्यापकता प्रदान की।

साध्वी मधुरयशा जी, साध्वी श्वेतप्रभा जी ने कविता के माध्यम से आचार्यश्री तुलसी को भावांजलि दी। साध्वी धवलप्रभा जी व साध्वी मादर्वयशा जी ने आचार्यश्री तुलसी के कर्तृत्व और वक्तृत्व को व्याख्यायित किया। राजकुमार सांखला ने गीत की प्रस्तुति दी। तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद के अध्यक्ष सुरेश सुराणा ने स्वागत भाषण से सबका अभिनंदन किया। ज्ञानशाला आंचलिक संयोजिका मंजु बैद, टीपीएफ के अध्यक्ष मोहित बैद, महिला मंडल की अध्यक्षा अनिता गीड़िया, जैन सेवा संघ के अध्यक्ष अशोक बरमेचा ने अपने विचार व्यक्त किए। कन्या मंडल की कन्याओं ने गीत की प्रस्तुति दी।

आभार ज्ञापन मंत्री सुशील संचेती ने किया। कार्यक्रम का संचालन लक्ष्मीपत बैद और सहमंत्री राकेश सुराणा ने किया।

इको फ्रेंडली दीपावली

गुवाहाटी।

अणुव्रत विश्व भारती द्वारा निर्देशित 'इको फ्रेंडली दीपावली' कार्यक्रम का आयोजन अणुव्रत समिति के तत्त्वावधान में किया। कार्यक्रम का शुभारंभ कार्यकारिणी सदस्य बाबूलाल सुराणा ने अणुव्रत गीत के संगान से किया। अणुव्रत आचार संहिता का वाचन मंत्री पवन जम्मड़ ने किया। स्वागत वक्तव्य एवं विषय-वस्तु की प्रस्तुति कार्यकारी अध्यक्ष नवरतन गधैया ने दी। उन्होंने कहा कि इस बार दीपावली को इको फ्रेंडली मनाने की कोशिश करें।

अणुविभा के राष्ट्रीय सहमंत्री छतर सिंह चोरड़िया ने भी इस विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किए। स्थानीय समिति के कार्यकारिणी सदस्य अशोक मालू ने उपस्थित बच्चों को इको फ्रेंडली दीपावली मनाने की प्रेरणा दी।

इस अवसर पर उपस्थित आस्था प्रेस्टीज सोसायटी के अध्यक्ष रमेश अग्रवाल एवं मंत्री राजेश गुप्ता ने अणुव्रत समिति को इस आयोजन के लिए धन्यवाद दिया। उपस्थित बच्चों ने इको फ्रेंडली दीपावली मनाने का संकल्प लिया। इस अवसर पर समिति के संरक्षक मदनमल, कार्यकारिणी सदस्य अशोक संचेती के साथ आस्था प्रेस्टीज के काफी सदस्यगण उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन कोषाध्यक्ष एवं जेटीएन प्रतिनिधि संजय चोरड़िया ने किया।

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि - अमूल्य निधि

नूतन गृह प्रवेश

दिल्ली।

मगनमल-जयकुमार सांड देशनोक, बीकानेर निवासी, दिल्ली प्रवासी का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक प्रवीण गोलछा व संस्कारक मनीष बरमेचा ने संपूर्ण विधि-विधान व मंगलमंत्रोच्चार से सानंद संपन्न करवाया।

नामकरण संस्कार

दिल्ली।

राजलदेसर निवासी, दिल्ली प्रवासी दीपक ऋतु नाहर के पुत्र का नामकरण जैन संस्कार विधि से संस्कारक सुभाष दुगड़, प्रकाश सुराणा, हिम्मत राखेचा, विकास सुराणा, संजय संचेती ने संपूर्ण विधि व मंगल मंत्रोच्चार से संपन्न करवाया। कार्यक्रम में सहयोगी के रूप में तेयुप, दिल्ली के अध्यक्ष विकास बोथरा व संस्कारक प्रवीण गोलछा ने अहम भूमिका निभाई।

तेयुप दिल्ली की तरफ से नाहर परिवार को मंगलभावना पत्रक व नामकरण पत्रक भेंट किया गया। नाहर परिवार की तरफ से अंकित सेठिया ने पधारे हुए सभी संस्कारकों व मेहमानों का आभार ज्ञापन किया।

नूतन गृह प्रवेश

सूरत।

श्रीडूंगरगढ़ निवासी, सूरत प्रवासी प्रतीक-गरिमा बोथरा के नूतन गृह प्रवेश संस्कार, जैन संस्कार विधि से संस्कारक विजयकांत खटेड़, प्रकाश डाकलिया, सुशील गुलगुलिया ने संपूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से सानंद संपन्न करवाया।

इस अवसर पर शासनसेवी जसकरण चोपड़ा ने व श्रीडूंगरगढ़ महिला मंडल की पूर्व अध्यक्षा झिंकार देवी बोथरा आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। तेयुप, सूरत की ओर से मंत्री अभिनंदन गादिया व सचेतक प्रकाश घोड़ावत ने अपने विचार व्यक्त करते हुए शुभकामनाएँ दी एवं मंगलभावना पत्रक भेंट किया।

नूतन गृह प्रवेश

रायपुर।

रायपुर निवासी, हरेंद्र पुगलिया के नूतन गृह प्रवेश शुभ मुहूर्त में संस्कारक सूर्य प्रकाश बैद द्वारा संपूर्ण विधि-विधान सहित मंत्रोच्चार के साथ जैन संस्कार विधि से किया गया। सहयोगी सुमित जैन ने सभी को तिलक एवं मोली बांधकर अभिनंदन किया। तेयुप अध्यक्ष वीरेंद्र डागा ने सभी उपस्थित जनों का स्वागत किया एवं धन्यवाद दिया।

नवीन प्रतिष्ठान शुभारंभ

अहमदाबाद।

प्रवीण सोलंकी एवं संभव ढेलड़िया बालोतरा निवासी के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से करवाया।

संस्कारक जितेंद्र छाजेड़, विजय छाजेड़ व दिनेश बागरेचा ने समवेत मांगलिक मंत्रोच्चार के साथ विधि को संपादित किया। तेयुप सहमंत्री गौतम बरड़िया ने शुभकामनाओं के साथ मंगलकामना प्रेषित की।

परिषद की ओर से स्मृति चिह्न के रूप में मंगलभावना पत्रक भेंट की गई। कार्यक्रम का संचालन संस्कारक विजय छाजेड़ ने किया।

नामकरण संस्कार

सूरत।

श्रीडूंगरगढ़ निवासी, सूरत प्रवासी नवीन-पायल के पुत्र का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक मनीष कुमार मालू, कांति भाई मेहता व निशांत पुगलिया ने विधि व मंगलमंत्रोच्चार से संपन्न करवाया।

सुरेंद्र व चंद्रसेन ने उपस्थित पारिवारिक जन का आभार ज्ञापन किया। तेयुप अध्यक्ष गौतम बाफना व अमित गन्ना ने मालू व झाबक परिवार का आभार ज्ञापन किया। और मंगलभावना पत्रक भेंट किया।

✦ *जब क्षयोपशम की स्थिति बनती है, तब संयम की भावना बनती है और वह उस दिशा में पादन्यास करता है।*
–आचार्यश्री महाश्रमण

आत्मा के आसपास

❑ **आचार्य तुलसी** ❑

प्रेक्षा : अनुप्रेक्षा

प्रेक्षाध्यान की उपसंपदा

(क्रमशः)

ध्यान की उपसंपदा का तीसरा बिंदु हैं–संयम। कोई भी साधक अध्यात्म के क्षेत्र में पदन्यास तभी कर सकता है, जब उसकी यात्रा का प्रारंभ संयम से हो। संयम मन का होता है, वाणी का होता है, इंद्रिय का होता है और शरीर का होता है। यह संयम जहाँ सध जाता है, वहाँ व्यक्ति में जागरूकता आ जाती है। आंतरिक जागरूकता का विकास जितना अधिक होता है, सम्यक्त्व भी उतना ही अधिक पुष्ट होता है। सम्यक्त्व देहरी का दीप है। वह दोनों ओर अपना प्रकाश फैलाता है। उससे सही मार्ग भी मिलता है और संयम भी सधता है। इस दृष्टि से प्रेक्षा की उपसंपदा में इसका महत्त्वपूर्ण स्थान है। उपसंपदा के जो तीन आदेश हैं, उनमें प्रथम आदेश अध्यात्म की दिशा में पदन्यास का प्रतीक है। दूसरा आदेश अंतर जगत में संचरण की प्रेरणा देता है और तीसरा आदेश जागरूकता के साथ आत्मरमण का सूचक है। आदेशत्रयी रूप यह उपसंपदा प्रेक्षा-साधक के लिए ओज आहार का काम करती है। उसे अपने जीवन में इस आहार से बराबर पोषण मिलता रहता है।

प्रश्न : लक्ष्य का निर्धारण होने के बाद वहाँ तक पहुँचने के लिए सही मार्ग की खोज आवश्यक है। वह सही मार्ग सम्यक्त्व की उपलब्धि होने से मिलता है अथवा सम्यक्त्व प्राप्त होने से पहले भी उपलब्ध हो सकता है?

उत्तर : मार्ग दो प्रकार का होता है–लक्ष्यानुबद्ध और लक्ष्य से अप्रतिबद्ध। अप्रतिबद्ध मार्ग कितना ही अच्छा हो, उससे लक्ष्य तक गति नहीं हो सकती। एक व्यक्ति का लक्ष्य है–अर्थार्जन। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए वह सामायिक स्वीकार कर बैठ जाए, यह मार्ग लक्ष्यानुबद्ध नहीं है। सामायिक बहुत अच्छी साधना है। जीवन को समरस बनाए रखने के लिए सामायिक बहुत आवश्यक है। किंतु उससे अर्थार्जन का लक्ष्य पूरा नहीं हो सकता। इसी प्रकार जिस व्यक्ति का लक्ष्य आत्मानुभव या चित्त की निर्मलता है, वह बाहर कहीं भी उलझ नहीं सकता। आत्मानुभव करने के लिए समुद्यत साधक आदि अर्थार्जन में जुटा रहता है, हिंसा आदि असत् प्रवृत्तियों में उलझा रहता है, काम-सेवन में तन्मय रहता है और मानता है कि मैं लक्ष्य के नजदीक पहुँच रहा हूँ, यह दृष्टिकोण का मिथ्यात्व है। तथ्य की नियामकता सम्यक् दृष्टिकोण से ही हो सकती है। जब दृष्टिकोण स्पष्ट और सम्यक् नहीं होता है, तब मार्ग के निर्धारण में भी कठिनाई खड़ी हो जाती है। और उलझनें बढ़ जाती हैं। उलझन की स्थिति में हर व्यक्ति अपने से दूसरे व्यक्ति को गलत प्रमाणित करने का प्रयास करता रहता है। इसी दृष्टि से मार्ग की खोज के साथ-साथ सम्यक्त्व का होना भी जरूरी है। सम्यक्त्व से भावित चित्त ही उलझन को समाप्त कर सकता है।

इस उलझन को दूर करने के लिए अनेकांत को आधार बना लेना चाहिए। एक विद्यार्थी स्कूल में अध्ययन करता है और दुकान में बैठकर धंधा करता है। दोनों विपरीत दिशागामी धाराएँ हैं। फिर भी विद्यार्थी की क्रियाएँ गलत नहीं हैं। क्योंकि गलती तब होती है, जब दोनों दिशाओं को एक करने का प्रयास हो। अपने-अपने स्थान पर दोनों दिशाएँ सही हैं। लक्ष्यानुबद्ध दिशा में गति करने के लिए सम्यक्त्व की उपलब्धि सबसे अधिक आवश्यक है। सम्यक् दृष्टि व्यक्ति अपने जीवन में अच्छा या बुरा जैसा करता है, उसे उसी परिवेश में जानता-समझता है। परिवर्तित परिवेश में कोई भी सच्चाई-सच्चाई नहीं रह सकती।

प्रेक्षाध्यान की उपसंपदा में मार्ग, सम्यक्त्व और संयम–तीनों का बराबर मूल्य है। वैसे जिस बिंदु को प्राथमिकता देनी होती है, उस बिंदु को उभारना जरूरी हो ही जाता है, किंतु उसकी प्रधानता में भी अन्य बिंदु उपेक्षित या गौण नहीं होने चाहिए। अनेकांत दृष्टि का प्रयोग ऐसे प्रसंगों पर ही अधिक उपयोगी सिद्ध होता है। अनेकांत को नहीं समझने वाला व्यक्ति इस बात में उलझ सकता है कि साधना के क्षेत्र में मार्ग का मूल्य है तब सम्यक्त्व और संयम की क्या जरूरत है? अथवा सम्यक्त्व या संयम ही सब कुछ है तो मार्ग की खोज क्यों की जाए? यह उलझन जब तक बनी रहती है, साधना की दिशा में प्रशस्त नहीं हो सकती। इसलिए साधना में उपयोगी प्रत्येक बिंदु का सापेक्ष मूल्यांकन करना आवश्यक होता है।

उपसंपदा के सूत्र

मित भोजन मितभाषिता मैत्री का आधार।
प्रतिक्रिया से शून्य हो क्रिया स्वयं निर्भार।।
सदा साधना में रहे भावक्रिया उदार।
पाँचों ही ये सूत्र हैं सच्चे पहरेदार।।

प्रश्न : प्रेक्षाध्यान की उपसंपदा स्वीकार करने के अनंतर ही ध्यान की साधना में सफलता प्राप्त हो जाती है या उसके लिए और भी कुछ करणीय होता है? साधक को साधना काल में किन-किन बातों का ध्यान रखना जरूरी है?

उत्तर : उपसंपदा स्वीकार कर लेने मात्र से किसी भी साधना में सफलता नहीं मिल सकती। किसी शिल्प या कला की साधना भी इतनी सरल नहीं है, फिर ध्यान की साधना इतनी सहज कैसे हो सकती है? ध्यान में तो भीतरी वृत्तियों का रूपांतरण होता है। रूपांतरण एक ही क्षण में घटित नहीं हो सकता। उसके लिए निश्चित समय और निश्चित प्रक्रिया से गुजरना होता है। प्रेक्षाध्यान का साधक ध्यान की उपसंपदा स्वीकार कर उसके अनुरूप साधना-सूत्रों का अनुसरण करता है। प्रेक्षाध्यान की उपसंपदा के पाँच सूत्र हैं–मिताहार, मितभाषण, मैत्री, प्रतिक्रिया शून्य क्रिया और भाव-क्रिया।

(क्रमशः)

साँसों का इकतारा

❑ **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा** ❑

(३१)

जन्मोत्सव आया है लेकर नई बहारें
जीओ वर्ष हजार आर्य! गण के उजियारे।।

आज धरा खुशहाल और आकाश प्रफुल्लित
दशों दिशाएँ गीत गा रहीं हो रोमांचित
मौन तोड़कर अधर हमारे मुखर हो रहे
मधुर कल्पना की धारा में प्राण खो रहे
अंधेरी राहों में अब किरणें संचारें।।

सत्य-शोध के लिए हलाहल तुम पी लेते
तूफानी लहरों पर निर्भर नौका खेते
हम भी पथ की बाधाओं से नहीं डरेंगे
धैर्य और साहस से संकट-सिंधु तरेंगे
दो आशीर्वर जीवन-रण में कभी न हारें।।

बोल तुम्हारे भर देते प्राणों में स्पंदन
चरण परस से बन जाती है माटी चंदन
तुम्हें देखकर उजड़ी हर वनिका खिल जाती
जीवन के दीवट पर जलती स्नेहिल बाती
हो जाए चैतन्य-जागरण तुम्हें निहारें।।

श्रमण और आचार्य बने अब अर्हत बनकर
करो मार्गदर्शन इस युग का स्वर्णिम दिनकर!
उम्र हमारी सारी तुम पर आज समर्पित
तुमको पाकर रोम-रोम है सबका प्रमुदित
ज्योतिर्मय झरने प्रभुवर के पाँव पखारें।।

(३२)

वंदना नव सृजन की मैं आज करना चाहती हूँ
जिंदगी के सफरनामे में उतरना चाहती हूँ।।

मांगलिक यह शुभ समय सौभाग्य से हमको मिला है
मनुज मन की बात क्या यह प्रकृति का कण-कण खिला है
गीत के ध्रुवपद सरीखा उभर जो व्यक्तित्व आए
रात दीवाली दशहरा बन दिवस उसको मनाए
सिद्धरस का स्पर्श पाकर मैं निखरना चाहती हूँ।।

सूर्य की पहली किरण जब आँख अपनी खोलती है
तिमिर-लहरी सहमती-सी झुरमुटों में डोलती है
रूप दिनमणि का समुज्ज्वल नील नभ में जब उतरता
नयन-दर्पण यदि अनाविल बिम्ब दुनिया का उतरता
उस अमल आलोक से मैं तिमिर हरना चाहती हूँ।।

भाल पर जिसके डिठौना आत्मबल पुरुषार्थ का है
प्राण में संगीत कौशल समर में नित पार्थ-सा है
नियति क्या टेढ़ी नजर से कभी उसको देख पाए?
जो मसीहा मनुजता का देव उसके गीत गाए
देख उसको आपदा का सिंधु तरना चाहती हूँ।।

जो नहीं विपरीत स्थितियों में कभी अभिभूत होता
वर्ष क्या दिन और पल भी जो कभी ना व्यर्थ खोता
क्रांत चिंतन शांत जीवन भ्रांतियों का तोड़ घेरा
भेद तम की व्यूह-रचना ला रहा नूतन सवेरा
प्राणधारा में वही कर्तृत्व भरना चाहती हूँ।।

(क्रमशः)

संबोधि

❑ आचार्य महाप्रज्ञ ❑

आज्ञावाद

भगवान् प्राह

(१६) व्यर्थं कुर्वीत नारम्भं, श्राद्धो नाक्रामको भवेत्।
हिंसां संकल्पजां नूनं, वर्जयेद् धर्ममर्मवित्।।

धर्म के मर्म को जानने वाला श्रावक अनावश्यक आरंभजा हिंसा न करे, आक्रमणकारी न बने और संकल्पजा हिंसा का अवश्य वर्जन करे।

तीन प्रकार के मनुष्य होते हैं–

(१) गृहस्थ, (२) गृहस्थ-साधक (उपासक श्रावक), (३) मुनि। यह भेद बाह्य आकृति या कार्य पर आधारित नहीं है। यह अंतरवृत्ति पर आधारित है। मुनि उसे कहते हैं–जो अपने को जगाने, जानने में पूर्णतया समर्पित हो चुका है। आत्महित ही जिसका एकमात्र ध्येय है, जो अहर्निश उसी में निरत रहता है, वह मुनि होता है।

गृहस्थ साधक वह होता है–जो गृहस्थ के उत्तरदायित्वों का निर्वाह करते हुए भी धर्म की दिशा में सतत गतिशील रहता है, धर्म को अपने सामने रखता है। संत सहजो ने कहा है–

जागृत में सुमिरन करो, सोवत में लौ लाय।
सहजो एक रस ही रहे, तार टूट ना जाय।।

गृहस्थ-उपासक और मुनि–दोनों का लक्ष्य एक है इसलिए सतत स्मृति दोनों के लिए अपेक्षित है। अंतर केवल कर्तव्य का होता है। देखना सिर्फ इतना ही है कि कार्य-व्यस्तता में स्मृति का तार कितना अविच्छिन्न रहता है। जिस गृह-साधक की स्मृति इतनी हो जाती है वह एक क्षण भी स्वयं से दूर नहीं होता। उसके कार्य एक स्तर पर चलते हैं और वह जीता किसी और स्तर पर है। जीवन जीने की यह परम कला है। इससे ही उसकी समस्त प्रवृत्तियाँ सत्य की ओर उन्मुक्त हो जाती हैं। उसका समग्र व्यवहार इसकी परिक्रमा किए चलता है। विधि-निषेध का केंद्र धर्म होता है। वह उसी के निर्णय को महत्त्व देता है। उसके आक्रांत होने या हिंसक होने का प्रश्न ही खड़ा नहीं होता।

गृहस्थ दोनों से विपरीत है। वह जीवन जीता है। किंतु जीवन का वास्तविक ध्येय उसके सामने नहीं रहता। लक्ष्य के आधार पर ही जीवन की वृत्ति का पहिया घूमता है। यदि ध्येय स्पष्ट और शुद्ध होता है तो क्रिया को भी उसका अनुगमन करना होता है। शुद्ध-साध्य के लिए साधन-शुद्धि की बात गौण नहीं हो सकती। जीवन का लक्ष्य केवल बहिर्मुखी (भौतिक) होता है, तब वृत्तियाँ अंतर्मुखी कैसे हो सकेंगी? गृहस्थ बहिर्मुखी होता है, इसलिए वह आक्रमण करने से भी चूकता नहीं। दुनिया के युद्धों के इतिहास के पीछे यही मनोवृत्ति काम कर रही है। पाँच हजार वर्षों के इतिहास में पंद्रह सौ बड़े युद्ध क्या बहिर्मुखता के द्योतक नहीं हैं? यह तो विश्व की स्थिति का दर्शन है। जीवन-निर्वाह के निरंतर चलने वाले कलह-झगड़े, वे क्या हैं? क्या उनके पीछे कोई वास्तविक उद्देश्य होता है। व्यर्थ के झंझटों में मनुष्य व्यर्थ उलझता है और दूसरों को भी उलझाता है। यह मानवीय स्वभाव की दुर्बलता है। सत्य, अहिंसा, नैतिकता आदि उसके लिए सिर्फ शब्द होते हैं। संकल्पजा हिंसा से भी यदि मनुष्य निरत हो सके तो सुख की सृष्टि संभव हो सकती है।

(क्रमशः)

अवबोध

❑ मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' ❑

(३) चारित्र मार्ग

प्रश्न-४ : चारित्र के कितने प्रकार हैं?

उत्तर : चारित्र के पाँच प्रकार हैं–

(१) सामायिक (२) छेदोपस्थापनीय (३) परिहार विशुद्धि
(४) सूक्ष्म संपराय (५) यथाख्यात

प्रश्न-५ : चारित्र के पाँच प्रकारों को कैसे परिभाषित करें?

उत्तर :

(१) सामायिक – सर्व सावद्य योगों का प्रत्याख्यान करना सामायिक चारित्र है।

(२) छेदोपस्थापनीय – विस्तार से विभागपूर्वक महाव्रतों की उपस्थापना करना व पूर्व पर्याय का छेद होने पर जो चारित्र मिलता है, उसे छेदोपस्थापनीय चारित्र कहते हैं।

(३) परिहार विशुद्धि – आत्म विशुद्धि की सावधिक निर्धारित तपस्या पूर्वक साधना को परिहार विशुद्धि चारित्र कहते हैं।

(४) सूक्ष्म संपराय – दसवें गुणस्थान में होने वाले चारित्र को सूक्ष्म संपराय चारित्र कहते हैं। इस चारित्र में क्रोध, मान, माया का संपूर्ण उपशम या क्षय हो जाता है। केवल सूक्ष्म लोभ का अंश विद्यमान रहता है।

(५) यथाख्यात – वीतराग के चारित्र को यथाख्यात कहते हैं।

(क्रमशः)

उपासना

(भाग - एक)

❑ आचार्य महाश्रमण ❑

आचार्य वज्रस्वामी

(क्रमशः)

बालक मुनि को मिल गया। यथासमय दीक्षा दी गई। आचार्य सिंहगिरि के पास अध्ययन करने के बाद आचार्य भद्रगुप्त के पास दशपूर्वों का ज्ञान प्राप्त किया। आचार्य पद प्राप्त किया। ये दशपूर्वधर अंतिम आचार्य थे। आकाशगामिनी विद्या भी इन्हें प्राप्त थी।

पाटलिपुत्र के श्रीसंपन्न श्रेष्ठी धन की कन्या रुक्मिणी वज्र पर मुग्ध हो गई। उसने प्रतिज्ञा कर ली कि मैं विवाह करूँगी तो आचार्य वज्र से ही करूँगी। आचार्य ने अपनी सुधाभरी वाणी से वैराग्य जगाकर उसको साध्वी बना दिया।

अनशनपूर्वक इनका स्वर्गवास वी०नि० ५८४–वि०सं० ११४–में हुआ। आठ वर्ष तक घर में रहे। अस्सी वर्ष का संयम-पर्याय था। छत्तीस वर्ष तक युगप्रधान पद को अलंकृत किया। अट्ठासी वर्ष की अवस्था में स्वर्ग गए। उनके साथ ही दशपूर्वों का ज्ञान तथा चतुर्थ अर्धनाराच संहनन विलुप्त हो गया।

वज्रस्वामी के जीवन में कई असाधारण क्षमताएँ थीं। आचारांग के महापरिज्ञा अध्ययन से वज्रस्वामी ने गगनगामिनी विद्या का उद्धार किया था।

आचार्य वज्र के समय में दो बार भयंकर दुष्काल की स्थिति बन गई थी। प्रथम दुष्काल के समय वज्रस्वामी का पदार्पण पूर्व से उत्तरापथ की ओर हुआ। वहाँ पर अति क्षयकारी दुर्भिक्ष का अत्यंत विकट संकट उपस्थित हो गया था। धरा पर क्षुधा से आर्त लोग आकुल-व्याकुल हो गए। दुष्कालजनित संकट से घिर जाने पर शय्यातर सहित संपूर्ण संघ को पट पर बैठाकर गगनगामिनी विद्या के द्वारा आकाश-मार्ग से उड़ते हुए वज्रस्वामी उत्तर भारत से महापुरी (जगन्नाथपुरी) नगरी में पहुँचे। महापुरी में सुकाल की स्थिति थी। जैन लोग वहाँ सुख से रहने लगे। वज्रस्वामी भी वहीं विराजे। चतुर्मास प्रारंभ हुआ। महापुरी का राजा बौद्ध धर्म का अनुयायी था। पर्युषण पर्व मनाने में राजा की ओर से आने वाली बाधाएँ वज्रस्वामी के विद्याबल प्रयोग से निरस्त हो गईं। निर्ग्रंथ धर्म की महिमा मुख-मुख पर मुखरित हुई। राजा वज्रस्वामी का परम भक्त बन गया।

आर्य वज्र धर्म-प्रचार के साथ शिष्य समुदाय को आगम वाचना भी देते थे। आर्य तोषलिपुत्र के शिष्य आर्यरक्षित को उन्होंने सार्ध नौ पूर्वों का ज्ञान प्रदान कर पूर्वज्ञान की राशि को सुरक्षित किया था।

वज्रस्वामी का मुख्य विहारक्षेत्र मालवा, मगध आदि स्थल थे। धर्म प्रभावना की दृष्टि से दुष्काल की घड़ियों में वे माहेश्वरी पुरी और हिमालय तक भी गए थे। ऐसा उल्लेख 'प्रभावक चरित्र' और 'उपदेशमाला' आदि ग्रंथों में है।

दुष्काल का पुनः आगमन और अनशन–आर्य वज्रस्वामी से संबंधित दक्षिणांचल की घटना विस्मयकारक है। एक बार वे यथोचित समय पर औषध लेना भूल गए थे। उन्हें अपनी स्मृति की क्षीणता पर आयुष्य की अल्पता का भान हुआ। इस समय उनके ज्ञानदर्पण में भावी अत्यंत भीषण दुष्काल के संकेत भी झलक रहे थे। वह वज्रस्वामी के समय में दुष्काल का द्वितीय बार आगमन था। आर्य वज्र को पिछले दुष्काल से भी आने वाला दुष्काल अति भयावह प्रतीत हुआ। गण-सुरक्षा हेतु पाँच सौ मुनियों सहित वज्रसेन को कड्कुण देश में विहरण करने का आदेश दिया।

द्वादशवर्षीय भयंकर दुर्भिक्ष की स्थिति उत्पन्न हो जाने के कारण दक्षिण विहारी श्रमण संघ को आहारोपलब्धि कठिन हो गई। वज्रस्वामी ने आपातकालीन स्थिति में क्षुधा शांति के लिए लब्धि-पिंड (लब्धि द्वारा निर्मित भोज्य सामग्री) ग्रहण करने का और विकल्प में अनशन स्वीकार का अभिमत शिष्यों के सामने प्रस्तुत किया। निर्मल चरित्र पर्याय के पालक आर्य वज्रस्वामी ने इस प्रकार के परामर्श प्रदान का प्रयोग शिष्यों के धृति परीक्षणार्थ ही किया होगा।

ताहे भणंति सव्वे, भत्तेणेएण सामि! अलमत्थु।
अणसणविहिणाववस्सं, साहिस्सामो महाधम्मं।।३६।।

(उपदेशमाला-विशेषवृत्ति, पृ० २१८)

(क्रमशः)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
15 - 21 नवंबर, 2021

✦ *परिवर्तन के आकर्षण में इतना नहीं बहना चाहिए कि व्यक्ति मूल्यपरक संस्कृति से दूर हो जाए।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

टीपीएफ द्वारा फ्यूजन-७ कनेक्ट ४ ग्रो का आयोजन

हैदराबाद।

साध्वी निर्वाणश्री जी के सान्निध्य में टीपीएफ द्वारा 'फ्युजन-७' कनेक्ट एंड ग्रो का आयोजन अगापुरा, हैदराबाद में हुआ। साध्वीश्री जी ने कहा कि फ्युजन एक बहुत बड़ा शब्द है। विस्तार की कामना सब करते हैं, पर वह स्थायी तभी होगा, जब उसमें गहराई भी हो। समाज में मूल्यों की जितनी प्रतिष्ठा होगी, जीवन की गहराई आएगी।

मुख्य वक्ता साध्वी डॉ० योगक्षेमप्रभा जी ने अपने प्रभावशाली वक्तव्य में कहा–इस धर्मसंघ ने हमें दिया बहुत है, पर उसके ऋण की अदायगी कैसे कर सके–ये सबके लिए चिंतनीय है। भक्ति होगी तो निष्ठा बढ़ेगी, संघीय अनुशासन के प्रति जागरूकता बढ़ेगी। प्रोफेशनल्स अपने प्रोफेशन के साथ अपने आध्यात्मिक विकास पर भी ध्यान दें।

कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के समुच्चारपूर्वक हुआ। टीपीएफ से राकेश कठोतिया, धीरज ललवानी, अणुव्रत सुराणा ने गीत की मधुर प्रस्तुति देते हुए मंगलाचरण किया। टीपीएफ के अध्यक्ष मोहित बैद ने सभी का स्वागत किया एवं साध्वीवृंद के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। तेरापंथ सभा, सिकंदराबाद मंत्री सुशील संचेती, जैन सेवा संघ के अध्यक्ष एवं कार्यक्रम के टाइटल प्रायोजक अशोक बरमेचा, महिला मंडल अध्यक्षा अनिता गीड़िया, तेयुप अध्यक्ष प्रवीण श्यामसुखा एवं अणुव्रत समिति अध्यक्ष प्रकाश भंडारी ने टीम को शुभकामनाएँ दी।

टीपीएफ के राष्ट्रीय अध्यक्ष नवीन पारख ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा–टीपीएफ का काम नए प्रोफेशनल्स को जोड़ना है। जब तक जुड़ाव न हो, हम संघ के प्रति दायित्व बोध नहीं जगा सकेंगे। इसका इस वर्ष का घोष है–Let's Shine Bright चमकना, संघ के फलक पर अपनी चमक बिखेरना।

टीपीएफ के राष्ट्रीय मंत्री हिम्मत मांडोत ने अपने वक्तव्य में साध्वी निर्वाणश्री जी के प्रति विनम्र कृतज्ञता ज्ञापित की। उन्होंने कहा कि एक कार्यकर्ता के रूप में आपने ही मुझे खड़ा किया था। जिस ढंग से कार्यकर्ताओं का निर्माण आप कर रहे हैं, वह सचमुच अनुकरणीय है। उन्होंने टीपीएफ की अनेक गतिविधियों का विवेचन किया।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि आईआरएस गौरव कुमार जैन (डिप्टी कमिश्नर, मुंबई) ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी व समाज को प्रेरणा दी। टीपीएफ साउथ जोन अध्यक्ष दिनेश धोका ने तत्त्वज्ञान की प्रासंगिकता बताते हुए रोचक प्रस्तुति दी। राष्ट्रीय सहमंत्री ऋषभ दुगड़ ने मेंबरशिप विषय पर विचार व्यक्त किए।

साध्वीवृंद ने गीत का संगान किया। टीपीएफ के राष्ट्रीय प्रोजेक्ट 'परामर्श' का पोस्टर एवं वीडियो लॉन्च राष्ट्रीय टीम द्वारा साध्वीश्री जी के सान्निध्य में किया गया।

कार्यक्रम के दूसरे सत्र में सभी २०२०-२०२१ में उत्तीर्ण हुए लगभग १५ तेरापंथी प्रोफेशनल्स का सम्मान सर्टिफिकेट के साथ किया गया एवं उनके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ देते हुए उन्हें टीपीएफ से जुड़ने की प्रेरणा दी।

तीसरे सत्र में 'स्पर्श' के अंतर्गत में सभी प्रोफेशनल्स के साथ नेटवर्किंग सत्र भी रखा गया, जहाँ सबने अपना परिचय व फीडबैक दिया। राष्ट्रीय टीम ने सभी को संघ सेवाएँ देने के लिए प्रेरित किया एवं जयपुर में होने वाले राष्ट्रीय अधिवेशन में ज्यादा संख्या में भाग लेने के लिए भी आह्वान किया।

कार्यक्रम का संयोजन प्रथम सत्र में सहमंत्री अणुव्रत सुराणा व पायल सुराणा, दूसरे सत्र में उपाध्यक्ष धीरज ललवानी व सहमंत्री चेतना बोथरा एवं तीसरे सत्र में कोषाध्यक्ष पंकज संचेती ने किया। कार्यक्रम में राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष नरेश कठोतिया, टीपीएफ नॉलेज बैंक चेयरमैन दीपक संचेती, साउथ जोन मंत्री रक्षिता बोहरा एवं तेरापंथ सभा, सिकंदराबाद अध्यक्ष सुरेश सुराणा की उपस्थिति रही। कार्यक्रम में टीपीएफ सदस्यों एवं स्थानीय श्रावकों की अच्छी संख्या में उपस्थिति रही। टीपीएफ, हैदराबाद के मंत्री सुनील पगारिया ने आभार ज्ञापन किया।

मासखमण तपोभिनंदन समारोह

विशाखापट्टनम।

साध्वी त्रिशला कुमारी जी के सान्निध्य में ३१ की तपस्या करने वाले विजय भाई जैन, ३१ की तपस्या करने वाली मंजुला पवन दुगड़ की धर्मपत्नी तथा आयंबिल भद्रोतर तप साधिका शांति देवी बैद का तपोभिनंदन का कार्यक्रम तेरापंथ भवन में रखा गया।

कार्यक्रम का आगाज संदीप सेठिया के द्वारा किया गया। विजयनगरम के सभाध्यक्ष प्रवीण अंचलिया तथा महिला मंडल अध्यक्षा रीता अंचलिया ने भाव व्यक्त किए। साध्वी त्रिशला कुमारी जी ने कहा हमें चातुर्मास मिला है इस चातुर्मास तप का अनूपम ठाट लगा है यह हमारे लिए एक यादगार बनेगा। महिला मंडल द्वारा सामुहिक गीत द्वारा तपस्वियों का अभिनंदन किया गया।

महासभा के आंचलिक प्रभारी विमल कुंडलिया ने अभिनंदन पत्र का वाचन किया। तेयुप अध्यक्ष ऋषभ सुराणा ने तीनों तपस्वियों की प्रशंसा की। गुंजन जैन ने गीत के द्वारा सभी को आह्लादित कर दिया।

असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी द्वारा प्रदत्त संदेश का वाचन साध्वी कल्पयशा जी ने किया। साध्वी रश्मिप्रभा जी ने गीत की प्रस्तुति दी।

साध्वी त्रिशला कुमारी जी ने कहा कि कहा जाता है पुष्प की कली कली में सौरभ होती हैं, इक्षु के पौर-पौर में माधुर्यरस भरा रहता है। इस तप के महासमरांगण में विजय जैन, मंजुला दुगड़ ने ३१ दिनों का मासखमण कर कर्म निर्जरा के साथ तेरापंथ धर्मसंघ की नींवों को मजबूत बनाया है वहीं आयंबिल भद्रोत्तर तप साधिका शांति देवी बैद ने अपने जीवन को तपमय बनाकर उत्कृष्ट कर्म निर्जरा की है। तीनों तपस्वी भाई-बहनें इसी प्रकार तपस्या करके अपने कुल और जैन शासन का नाम रोशन करें।

साध्वी कल्पयशा जी ने कार्यक्रम का संचालन किया। कार्यक्रम के समापन में ३ तपस्वियों को साध्वीश्रीजी ने प्रत्याख्यान करवाए तथा तेरापंथ सभा, तेयुप, महिला मंडल ने मोमेंटो, पौषध कीट एवं अभिनंदन पत्र भेंट कर सम्मानित किया। कार्यक्रम में विजयनगर, केसिंगा, कोलकाता आदि क्षेत्रों से श्रावक-श्राविकाएँ समुपस्थित थे। केसिंगा के श्रावक रामनिवास जैन आदि ने भी मोमेंटो गुरुदेव की तस्वीर आदि भेंट की।

दो दिवसीय नमस्कार महामंत्र

गदग।

तेरापंथ भवन में शासनश्री साध्वी पद्मावती जी के सान्निध्य में द्वि-दिवसीय नमस्कार महामंत्र का सजोड़े जप रखा गया, जिसमें ४८ जोड़ों ने भाग लिया। शासनश्री साध्वी पद्मावती जी ने कहा कि मंत्र विविध शक्तियों का खजाना है, सभी धर्मों में मंत्र जप की परंपरा रही है, प्रत्येक अक्षर मंत्र है। नमस्कार महामंत्र सबसे बड़ा मंत्र है। यह महामंत्र सब पापों का नाश करने वाला है।

साध्वी डॉ० गवेषणा जी ने कहा कि प्रत्येक तीर्थंकर का जप या उनका नाम संकट निवारण या विघ्न निवारण का काम करता है। उनका स्मरण आत्मा के निकट जाने का स्मरण है। साध्वी मयंकप्रभा जी ने कहा कि मंत्र का जप बिखरी चित्त शक्तियों को एकाग्र करता है। साध्वी मेरुप्रभा जी व साध्वी दक्षप्रभा जी ने गीतिका प्रस्तुत की। गदग महिला मंडल अध्यक्षा प्रेमलता कोठारी, मंत्री विजेता भंसाली आदि बहनों ने अभातेमम के राष्ट्रीय अधिवेशन में प्राप्त मोमेंटो, गदग महिला मंडल को भेंट किया।

एकाह्निक तुलसी-शतकम्

मुनि सिद्धकुमार

(क्रमशः)

(३८) शैक्षस्थविरवृद्धेषु, बालग्लानादिकेषु च।
यथायोग्यप्रकारेण, शासने करणे क्षमः।।

शैक्ष हो या स्थविर, वृद्ध हो, बाल हो या ग्लान, आप सभी पर यथायोग्य उपचार से शासना करने में सक्षम थे।

(३९) 'लालने बहवो दोषास्ताडने बहवो गुणाः'।
प्राचीनैषा श्रुतिर्देव!, जनन्या विफलीकृता।।

एक प्राचीन श्रुति है कि लाड़ में बहुत दोष है और ताड़ने में बहुत गुण, परंतु गुरुदेव आपश्री की माता साध्वी वदनां जी ने इस श्रुति को विफल कर दिया।

(४०) गृह्णन्-गृह्णन् गुणान् कालुसुगुरुभातृमातृभिः।
अत्यल्पसमये स्वामिन्नभवस्त्वं गुणाकरः।।

पूज्य कालुगणी, माता वदनांजी एवं भाईजी महाराज चम्पालाल जी स्वामी से गुण ग्रहण करते-करते आप अल्प समय में ही गुणाकर अर्थात् गुणों की खान बन गए।

(४१) भवतः सद्कृपादृष्ट्या चास्ति शतमुखोन्नतिः।
अकृपापूर्णदृष्ट्या च, सदा भवत्यवक्षयः।।

आपकी कृपापूर्ण दृष्टि से व्यक्ति सौ प्रकार से विकास करता है एवं अकृपापूर्ण दृष्टि से सदा नाश को प्राप्त होता है।

(४२) कदापि न्यायमध्ये नानयत् प्रियाप्रियं भवान्।
न्यायप्रिय! भुवि स्वामिन्नेतन्न्यायोऽतिदुर्लभः।।

आपने कभी भी न्याय करने के विषय में प्रियता और अप्रियता को मध्य में नहीं आने दिया। हे न्यायप्रिय! इस धरती पर ऐसा न्याय दुर्लभ है।

आपके चमत्कार

(४३) नो जानामि त्वदीयेषु, शब्देषु का चमत्कृतिः।
श्रोतारो विस्मरन्ति स्म, कालबोधं सदैव हि।।

मैं नहीं जानता आपके शब्दों में क्यों चमत्कार था, जो श्रोताओं को समय का बोध ही नहीं रहता।

(४४) त्वदीये नहि जानामि, सुनाम्नि का चमत्कृतिः।
सैनिकेन श्रुतं नाम, पांचाले चामुचद्यतिम्।।

प्रभो! मैं नहीं जानता आपके नाम में क्या चमत्कार है। जब पंजाब में मुनि मांगीलाल जी (मुकुल) को जासूस समझकर पुलिस ने पकड़ लिया, बंदूकें तान लीं, तब जैसे ही उन्होंने यह बताया कि वे आचार्य तुलसी के शिष्य हैं, उन्होंने तुरंत क्षमा माँगते हुए मुनिश्री को छोड़ दिया। (प्रेरणा : पल दो पल की, भाग-१, पृष्ठ २२)

(४५) नो जानामि त्वदीयेषु, मन्त्रेषु का चमत्कृतिः।
तुलसीनामजापेन, समाप्ता कर्णवेदना।।

मैं नहीं जानता तुलसी नाम के मंत्रों में क्या चमत्कार है। जब साध्वी चांदकुमारी जी (लाडनूं) के अचानक कान में छेद हो गया, मवाद निकलने लगी और डॉक्टर ने ऑपरेशन ही एकमात्र समाधान बताया, तब साध्वीश्री ने मात्र 'जय तुलसी' के जप से स्वयं को स्वस्थ बना लिया। डॉक्टर को भी आश्चर्य हुआ कि इनके कान छेद कैसे ठीक हो गया। (प्रेरणा : पल दो पल की, भाग-१, पृष्ठ ८२)

(४६) त्वदीये नहि जानामि, मुहूर्त्ते का चमत्कृतिः।
यशोफूलसुसाध्वीभ्यां, मुहूर्त्तं सिद्धिकारकम्।।

गुरुदेव! मैं नहीं जानता आपके द्वारा दिए गए मुहूर्तों में क्या चमत्कार है। साध्वी फूलकुमारी जी एवं साध्वी यशोधरा जी ने आपसे मुहूर्त प्राप्त कर प्रथम बार बिहार एवं बंगाल जैसे सुदूर प्रांतों की सफल यात्रा की। (प्रेरणा : पल दो पल की, भाग-१, पृष्ठ ७६)

(शेष अगले अंक में)

दीपावली पूजन कार्यशाला के आयोजन

दीपावली पूजन कार्यशाला

गंगाशहर।

जैन संस्कार विधि से दीपावली पूजन कार्यशाला-२०२१ का आयोजन साध्वी पावनप्रभा जी के सान्निध्य में शांति निकेतन के प्रांगण में किया गया। इस कार्यशाला में मुख्य वक्ता उपासक, संस्कारक कन्हैयालाल बोथरा, अभातेयुप संस्कारक रतनलाल छल्लाणी, पवन छाजेड़, पीयूष लुणिया, देवेंद्र डागा, भरत गोलछा ने दीपावली पूजन विधिवत रूप से समझाया। कन्या मंडल द्वारा महावीर अष्टकम से कार्यक्रम शुरू हुआ।

इस अवसर पर तेयुप अध्यक्ष विजेंद्र छाजेड़, सभा उपाध्यक्ष नवरत्न बोथरा की गरिमामय उपस्थिति रही। संस्कारकों ने अपने घर-परिवार में दीपावली पूजन जैन संस्कार विधि से मनाने के लिए संकल्प दिलवाया।

दीपावली पूजन कार्यशाला का आयोजन

कांटाबांजी (ओडिशा)।

तेयुप द्वारा जैन संस्कार विधि के माध्यम से दीपावली पूजन कार्यशाला का आयोजन स्थानीय तेरापंथ भवन में किया गया। तेरापंथ महिला मंडल, कांटाबांजी के सहयोग से कार्यक्रम संपन्न हुआ। महावीर अष्टकम व विजय गीत का संगान किया गया। तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा बॉबी जैन ने इको फ्रेंडली दिवाली मनाने एवं जैन संस्कार विधि से दीपावली पूजन करने के लिए सभी को प्रेरित किया।

महिला मंडल से ममता जैन ने मंच संचालन किया एवं जैन संस्कार विधि से दीपावली पूजन करने की विधि सभी को समझाई। तेयुप अध्यक्ष हेमंत जैन ने जैन संस्कार विधि से दीपावली पूजन करने हेतु सभी से आग्रह किया एवं कार्यक्रम में तेरापंथ सभा, तेयुप तथा तेमम व ज्ञानशाला भी शामिल हुए। तेयुप मंत्री पीयूष जैन ने सभी का आभार ज्ञापन किया।

दीपावली पूजन कार्यशाला

रतलाम।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा तेरापंथ सभा भवन में साध्वी प्रबलयशा जी के सान्निध्य में जैन संस्कार विधि से दीपावली पूजन कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का प्रारंभ नमस्कार महामंत्र के मंगल संगान से हुआ। तत्पश्चात संस्कारक संजय पालरेचा ने जैन संस्कार विधि की संक्षिप्त जानकारी दी। मंगलभावना यंत्र के विषय में संस्कारक देवेंद्र मेहता ने जानकारी दी।

साध्वी सुयशप्रभा जी द्वारा गीतिका का संगान किया गया। कार्यक्रम में महासभा कार्यसमिति सदस्य अशोक बरमेचा, अभातेयुप कार्यसमिति सदस्य पुनीत भंडारी, महिला मंडल अध्यक्षा रीना मांडोत, तेयुप निवर्तमान अध्यक्ष हेमंत दख, सहमंत्री अंकित बम्बोरी सहित अनेकजनों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन संस्कारकद्वय संजय पालरेचा एवं देवेंद्र मेहता द्वारा व आभार ज्ञापन तेयुप अध्यक्ष सिद्धार्थ गांधी ने किया।

दीपावली पूजन कार्यशाला

टी-दासरहल्ली।

अभातेयुप द्वारा निर्देशित जैन संस्कार विधि से दीपावली पूजन कार्यशाला का आयोजन तेयुप ने तेरापंथ सभा भवन में किया। कार्यशाला का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से हुआ।

स्वागत वक्तव्य में अध्यक्ष कुशल बाबेल ने स्वागत किया तथा इस जैन संस्कार विधि को जन-जन की विधि बनाने का आह्वान किया। मुख्य संस्कारक विक्रम दुगड़ एवं जितेंद्र घोषल ने दीपावली पूजन की पूर्णविधि मंगल मंत्रोच्चार के साथ संपन्न कर उपस्थित जनों को विधि के बारे में जानकारी दी। संस्कारकों ने उपस्थित श्रावक समाज की जिज्ञासाओं का समाधान किया।

इस अवसर पर ट्रस्ट परिवार, महिला मंडल, परिषद कार्यसमिति सदस्य, सदस्यगण, किशोर मंडल एवं कन्या मंडल की उपस्थिति रही। संयोजक विनोद बोहरा सह-संयोजक अशोक बोहरा का श्रम रहा। आभार तेयुप मंत्री दिलीप पोखरना ने दिया। सकल जैन समाज की उपस्थिति में आयोजित इस कार्यक्रम का समापन मंगलपाठ से हुआ।

खुशियों की दीपावली

इचलकरंजी।

अभातेयुप निर्देशित 'खुशियों की दीपावली' कार्यक्रम के अंतर्गत तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा नवचैतन्य बाल गृह में जाकर आवश्यक खाद्य सामग्री व मिठाई आदि का वितरण किया गया। इस अवसर पर तेयुप अध्यक्ष मुकेश भंसाली, स्थानीय किशोर मंडल प्रभारी प्रवीण भंसाली, किशोर मंडल संयोजक मोहित चोरड़िया आदि सहित किशोर मंडल सदस्य उपस्थित रहे।

अभातेयुप की शाखा परिषदों के अंतर्गत आनेवाले किशोर मंडलों द्वारा दीपावली के पावन पर्व पर 'खुशियों की दीपावली' कार्यक्रम के माध्यम से जरूरतमंदों को आवश्यक सामग्री वितरित की गई। साथ ही इको फ्रेंडली दीपावली मनाने का संदेश दिया।

भगवान महावीर के निर्वाण दिवस

नोहर।

जैन धर्म में दीपावली को महावीर निर्वाण दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में शासनश्री मुनि विजय कुमार जी ने कहा—दीपावली विभिन्न संस्कृतियों व इतिहास के विविध प्रसंगों से जुड़ा हुआ पर्व है। जैन धर्म में यह भगवान महावीर के निर्वाण की घटना से जुड़ा हुआ पर्व है। भगवान महावीर इस युग के २४वें अंतिम तीर्थंकर हुए। पावापुरी (बिहार) में अमावस्या की रात प्रवचन करते-करते पद्मासन में उन्होंने नश्वर देह का त्याग किया था, एक ज्योति सदा के लिए महा ज्योति के रूप में प्रतिष्ठित हो गई। कहते हैं, उस अमावस्या की रात को लोगों ने दीप जलाकर आलोकित कर दिया।

शासनश्री ने दीपावली के महत्त्व को बताते हुए कहा कि यह जीवन में खुशहाली लाने का पर्व है न कि जेब खाली करने का। बच्चों और युवकों से विशेष रूप से कहना है—वे पटाखों से यथासंभव बचने की कोशिश करें। पर्यावरण सुरक्षा, स्वास्थ्य सुरक्षा, अहिंसा की परिपालना, आर्थिक बचत आदि अनेक दृष्टियों से इसकी उपयोगिता सिद्ध होती है।

कार्यक्रम का प्रारंभ स्थानीय तेमम के मंगलाचरण से हुआ। महेंद्र सिपानी, सुशील सिपानी, महिला मंडल प्रधान किरण देवी, पुष्पा सिपानी, सुनील तातेड़, सरला देवी सिपानी, सज्जन देवी छाजेड़ ने भगवान महावीर की अभ्यर्थना में अपनी प्रस्तुतियाँ दी। कार्यक्रम का संयोजन कोमल तातेड़ ने किया। निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में पूरे दिन भगवान महावीर का जप चला।

तेयुप के विविध कार्यक्रम

सेवा की ओर बढ़ते कदम

विजयनगर।

तेयुप विजयनगर द्वारा सेवा के उपक्रम के अंतर्गत मागड़ी रोड स्थित गांधी ओल्ड एज होम में सुंदरलाल, कमलेश कुमार, चोपड़ा परिवार द्वारा अल्पाहार आयोजन का कार्यक्रम रखा गया।

परिषद साथी संजय भटेवरा ने सभी का स्वागत किया एवं सेवा कार्य टीम के प्रति मंगलकामना व्यक्त की। तेयुप विजयनगर द्वारा सेवा के उपक्रम के अंतर्गत आयोजित इस कार्यक्रम में परिषद से सहमंत्री कमलेश चोपड़रा, बारह व्रत कार्यशाला संयोजक संजय भटेवरा, सह-संयोजक सुशील पारख एवं चोपड़ा परिवार से पारिवारिकजन आदि उपस्थित थे। सहयोगी परिवार का आभार कार्यक्रम सह-संयोजक सुशील पारख ने किया। गांधी ओल्ड एज होम के संचालक ने इस कार्य की प्रशंसा की।

रक्तदान शिविर का आयोजन

सूरत।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा नमस्कार महामंत्र के सामुहिक मंत्रोच्चार से रक्तदान शिविर का शुभारंभ किया गया। सूरत के प्रथम नागरिक मेयर हिमाली बहन बोगावाला ने रक्तदान कैंप में पधारकर सभी कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन किया और आईटीसी बिल्डिंग के सदस्यों को आह्वान किया कि वे अधिक-से-अधिक रक्तदान करें।

तेयुप के अध्यक्ष गौतम बाफना ने हिमाली का सम्मान किया। सूरत म्यूनीसिपल कॉर्पोरेशन स्टैंडिंग कमिटी चेयरमैन परेश पटेल, आचार्य महाप्रज्ञ अक्षयतृत्य व्यवस्था समिति के अध्यक्ष संजय सुराणा ने अपने-अपने भाव व्यक्त किए एवं कार्यकर्ताओं के उत्साह की सराहना की।

१५८ यूनिट रक्त एकत्रित हुआ। इसमें आईटीसी बिल्डिंग के सदस्य एवं तेयुप के सदस्यों ने भी रक्तदान किया। इस शिविर में विशेष सहयोग आईटीसी मैनेजमेंट राजुल और दिनेश का रहा। तेयुप के अध्यक्ष गौतम बाफना ने सभी सदस्यों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में तेयुप के पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की अच्छी उपस्थिति रही।

एमबीडीडी ऑन कॉल-एसडीपी ऑन कॉल

सरदारपुरा।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप द्वारा मेगा ब्लड डोनेशन ड्राईव के तहत व्यापक रूप में एसडीपी डोनेशन करवाया गया। जोधपुर शहर में डेंगू महामारी अपने पैर पसार चुकी है। इस महामारी के कारण प्रतिदिन भारी मात्रा में एसडीपी, प्लेट्स की जरूरत पड़ रही है। अभातेयुप के समिति सदस्य व तेयुप सरदारपुरा के मंत्री ने रक्तदाताओं को प्रेरित किया। १५ यूनिट एसडीपी डोनेट करवाया।

तेयुप सरदारपुरा मंत्री रक्तदान, प्लाज्मा डोनेशन, एसडीपी डोनेशन में उल्लेखनीय कार्य कर रहे हैं। डेंगू के इस विपदा काल के दौरान तेयुप, सरदारपुरा, मंत्री कैलाश जैन के अथक प्रयासों से ८० से अधिक व्यक्तियों के लिए जीवनदायी एसडीपी डोनेट करवा चुके हैं।

मेगा जोड़ चेकअप कैंप

रायपुर।

तेयुप द्वारा टीपीएफ के सहयोग से मेगा जोड़ चेकअप कैंप का शुभारंभ आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर व डेंटल केयर, रायपुर में हुआ। जिसमें विश्वविख्यात ऑर्थो सर्जन डॉ० धीरज मरोठी, टीम सदस्य सहयोगी डॉ० सिद्धार्थ कुमार ने ११ पेशेंट्स का चेकअप अत्यंत राहत दर पर कर उन्हें उचित स्वास्थ्य परामर्श एवं समाधान प्रदान करवाया।

चेकअप कैंप में तेयुप अध्यक्ष वीरेंद्र डागा व टीपीएफ अध्यक्ष सुनील जैन, एटीडीसी प्रभारी निर्मल गांधी, तेयुप उपाध्यक्ष सुमित जैन, कार्यसमिति सदस्य मनीष समदड़िया, सदस्य अरुण सिपानी ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई।

✦ *एक चक्षु है और उसे धर्म कहा गया है। अविवेकपूर्वक किया गया कार्य अनर्थकारी हो सकता है।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
15 - 21 नवंबर, 2021

✦ *स्वाध्याय भी हमारी साधना का एक मुख्य अंग है। इससे न केवल ज्ञान का विकास होता है, अपितु वैराग्य भी वृद्धिंगत और परिपुष्ट होता है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

दीपावली पूजन जैन संस्कार विधि कार्यशाला

ओसवाल भवन, शाहदरा

शासनश्री साध्वी संघमित्रा जी के सान्निध्य में ओसवाल भवन, शाहदरा में दीपावली पूजन कार्यशाला का आयोजन किया गया।

नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। मुख्य संस्कारक सुभाष दुगड़ ने दीपावली पूजन अपने घरों, व्यवसायिक प्रतिष्ठान में किस तरह जैन संस्कार विधि से पूजा करनी है उसका डेमो प्रस्तुत किया। साथ ही मंगलभावना यंत्र व जैन संस्कार विधि की महत्त्वपूर्ण जानकारी सभी को अवगत करवाई। कार्यक्रम का संचालन संस्कारक प्रकाश सुराणा ने जैन संस्कार विधि की जानकारी दी। तेयुप दिल्ली के अध्यक्ष विकास बोथरा ने सभी संस्कारकों व सभी सभा-संस्थाओं के पदाधिकारियों का स्वागत-अभिनंदन किया।

शासनश्री साध्वी संघमित्रा जी ने परिवार में हम किस तरह से इन संस्कारों को अपना सकते हैं, इस विषय पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर शहादरा सभा के अध्यक्ष राजेंद्र सिंघी, मंत्री सुरेश भंसाली, ओसवाल समाज के अध्यक्ष बाबूलाल दुगड़, कन्या मंडल संयोजिका मुस्कान तातेड़, तेयुप पदाधिकारियों व श्रावक-श्राविका समाज की अच्छी उपस्थिति रही। आभार ज्ञापन तेयुप के क्षेत्रीय संयोजक पवन पारख ने किया।

कृष्णानगर, दिल्ली

शासनश्री साध्वी रविप्रभा जी के सान्निध्य में दीपावली पूजन कार्यशाला का आयोजन उपासक एवं संस्कारक विमल गुनेचा, प्रकाश सुराणा, हेमराज राखेचा, राजेश दुगड़ एवं जतन श्यामसुखा द्वारा मंगल मंत्रोच्चार द्वारा संपादित हुआ।

साध्वीश्री जी द्वारा नमस्कार महामंत्र उच्चारण के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। तेयुप, दिल्ली अध्यक्ष विकास बोथरा ने सभी का स्वागत किया। मुख्य संस्कारक विमल गुनेचा ने जैन संस्कार विधि द्वारा अपने घर एवं व्यवसायिक प्रतिष्ठान में दीपावली पूजन किस प्रकार करना है उसका डेमो प्रस्तुत किया एवं मंगलभावना यंत्र की विस्तृत जानकारी सभी को अवगत करवाई। संस्कारक एवं दिल्ली, तेयुप जैन संस्कार विधि प्रभारी प्रकाश सुराणा ने कहा कि इस अल्पपरिग्रह व अल्पारंभ वाली विधि को अपने घरों में ज्यादा-से-ज्यादा अपनाएँ।

शासनश्री साध्वी रविप्रभा जी ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी द्वारा प्रदत्त जैन संस्कार विधि को अपनाकर हम अपना बाह्य वातावरण के साथ आंतरिक शरीर भी प्रकाशित कर सकते हैं। साथ ही साथ दीपावली त्योहार के बारे में भी ज्ञानवर्धक जानकारी प्रदान की।

इस कार्यक्रम में गांधीनगर सभा के अध्यक्ष अनिल पटवा, उपाध्यक्ष दिनेश डूंगरवाल, मंत्री महेंद्र श्यामसुखा, विकास मंच के पदाधिकारीगण, महिला मंडल गांधीनगर, कृष्णानगर संयोजिका सीमा चोपड़ा, जेटीएन प्रतिनिधि अंकिता डागा व तेयुप के कार्यकर्ताओं सहित अनेक जन उपस्थित थे। कार्यशाला का संचालन संस्कारक हेमराज राखेचा ने किया एवं आभार ज्ञापन तेयुप के क्षेत्रीय संयोजक गौरव मणोत ने किया।

रोहिणी, दिल्ली

शासनश्री साध्वी रतनश्री जी के सान्निध्य में रोहिणी, दिल्ली में दीपावली पूजन कार्यशाला का आयोजन संस्कारक सुरेंद्र नाहटा, संस्कारक हिम्मत राखेचा एवं संस्कारक मनीष बरमेचा द्वारा मंगल मंत्रोच्चार द्वारा संपादित हुआ।

साध्वीश्री जी द्वारा नमस्कार महामंत्र उच्चारण से कार्यक्रम शुभारंभ हुआ। तेयुप सदस्यों द्वारा विजय गीत का संगान किया गया। तेयुप, दिल्ली रोहिणी के क्षेत्रीय संयोजक सुभम जैन ने संस्कारकों व सभी उपस्थितजनों का स्वागत व अभिनंदन किया। संस्कारक सुरेंद्र नाहटा ने दीपावली पूजन किस प्रकार करना है, उसका डेमो प्रस्तुत किया।

शासनश्री साध्वी रतनश्री जी ने कहा कि तेयुप दिल्ली बहुत अच्छा काम कर रही है। साथ ही दीपावली त्योहार के बारे में भी ज्ञानवर्धक जानकारी प्रदान की। इस कार्यशाला में मंच पदाधिकारी के रूप में रोहिणी सभा के अध्यक्ष मदनलाल जैन, पश्चिम विहार सभा के अध्यक्ष श्यामलाल जैन, पालम सभा के अध्यक्ष ईश्वर जैन, रोहिणी सभा के मंत्री राजेश बैंगाणी, पश्चिम विहार सभा के मंत्री मनीष बरमेचा, उपस्थित थे। तेयुप के उपाध्यक्ष संजीव जैन व तेयुप कार्यकर्ताओं सहित अनेकजन उपस्थित थे। कार्यशाला का संचालन क्षेत्रीय संयोजक शुभम जैन ने किया एवं आभार ज्ञापन तेयुप सदस्य शुभम जैन ने किया।

शालीमार बाग, दिल्ली

बहुश्रुत साध्वी कनकश्री जी के सान्निध्य में शालीमार बाग, दिल्ली में दीपावली पूजन कार्यशाला का आयोजन उपासक व संस्कारक राजकुमार जैन, संस्कारक कमल सेठिया, प्रवीण गोलछा, अशोक सेठिया व सौरभ आंचलिया द्वारा मंगल मंत्रोच्चार द्वारा संपादित हुआ।

तेयुप, दिल्ली के मंत्री सौरभ आंचलिया ने संस्कारकों व उपस्थित सभी का स्वागत-अभिनंदन किया। उपासक व संस्कारक राजकुमार जैन ने दीपावली पूजन का डेमो प्रस्तुत किया। संस्कारक कमल सेठिया ने जैन संस्कार विधि से बही-खातों का शुभारंभ कैसे करें, की महत्त्वपूर्ण जानकारी अवगत करवाई।

साध्वी कनकश्री जी ने कहा कि तेयुप, दिल्ली अच्छा कार्य कर रही है। जैन संस्कार विधि अपनी विधि अपने संस्कार हैं, इस विधि को ज्यादा-से-ज्यादा अपने घरों में अपनाएँ।

इस कार्यशाला में शालीमार बाग सभा के अध्यक्ष प्रवीण बेगवानी, मंत्री अशोक जैन, दिल्ली उत्तर-मध्य सभा के अध्यक्ष दीपक जैन, मंत्री चंद्रकांत कोठारी, पीतमपुरा सभा के मंत्री मुकेश बोथरा, तेरापंथ महिला मंडल निवर्तमान उपाध्यक्ष सज्जन बाई गीड़िया एवं विभिन्न सभा-संस्थाओं के पदाधिकारी उपस्थित रहे। तेयुप, दिल्ली शालीमार बाग, क्षेत्रीय संयोजक सुनील गीड़िया व तेयुप के कार्यकर्ताओं की अच्छी उपस्थिति रही। कार्यशाला का संचालन उपासक व संस्कारक राजकुमार जैन ने किया एवं आभार ज्ञापन तेयुप दिल्ली उत्तर-मध्य संयोजक प्रतीक चिंडालिया ने किया।

दीपावली पूजन कार्यशाला

लिलुआ।

अभातेयुप के निर्देशन में दीपावली पूजन कार्यशाला का आयोजन तेयुप द्वारा तेरापंथ भवन में उपासक एवं संस्कारक अरुण नाहटा, राकेश राखेचा द्वारा कार्यशाला आरंभ नमस्कार महामंत्र द्वारा शुरुआत किया गया। उसके पश्चात विजगीत कार्यकारिणी सदस्य आशीष चौपड़ा ने गाया। श्रावक निष्ठा पत्र सहमंत्री-द्वितीय अमित जैन ने शपथ दिलाई, स्वागत भाषण अध्यक्ष विकास पुगलिया ने अपनी बात रखी एवं आभार ज्ञापन मंत्री गौरव घोड़ावत ने किया।

इको फ्रेंडली दीपावली

भायंदर।

अणुव्रत समिति, मुंबई के तत्त्वावधान में क्षेत्र भायंदर में इको फ्रेंडली दीपावली महिला मंडल, कन्या मंडल और ज्ञानशाला सभी को बिना प्रदूषण दीपावली मनाने का संकल्प अणुव्रत क्षेत्रीय सह-प्रभारी संगीता हिंगड़ ने दिलाए।

इसको सफल बनाने में महिला मंडल की बहनों, ज्ञानशाला टीचर्स, ज्ञानशाला के नन्हे-मुन्ने बच्चों एवं महिला मंडल के पदाधिकारियों आदि की अच्छी उपस्थिति रही।

अशांत विश्व को शांति का संदेश दिया आचार्यश्री तुलसी ने

जीन्द।

शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में आचार्यश्री तुलसी का १०८वाँ जन्म दिवस अणुव्रत दिवस के रूप में मनाया। मंगलाचरण साध्वी सुमंगलाश्री जी, साध्वी सुलभयशा जी ने सुमधुर गीतिका से किया। साध्वी कुंथुश्री जी ने कहा कि बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे—आचार्यश्री तुलसी। उनका व्यक्तित्व विराट था। आचार्यश्री तुलसी ने समस्याओं के समाधान हेतु अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात किया। वे राष्ट्रसंत थे। देश के चरित्र उन्नयन में भरसक प्रयास किया।

साध्वी कंचनरेखा जी ने कहा कि अणुव्रत व्यक्ति विशेष का नहीं मानव मात्र का है। महिला मंडल अध्यक्षा उपासिका कांता मित्तल ने गीत की प्रस्तुति दी। सभा मंत्री मास्टर नारायण सिंह रोहिल्ला, नरेश जैन, श्रीचंद जैन आदि वक्ताओं ने गुरुदेव तुलसी के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर तेरापंथ समाज द्वारा चिकित्सा के रूप में अपनी उल्लेखनीय सेवा देने पर डॉक्टर को सम्मानित किया। महिला मंडल जीन्द द्वारा 'तुलसी को जानो' प्रतियोगिता में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को सम्मानित किया गया।

सम्यग् दर्शन, ज्ञान और चारित्र प्राप्त करने का...

(पृष्ठ १२ का शेष)

दूसरी बात यह बताई गई है कि वर्तमान में जो संबोधि को प्राप्त नहीं होता उसे अगले जन्म में भी सुलभ नहीं होती। कारण अगले जन्म में नरक में चले गए या देवगति में चले गए तो वहाँ आशा कम है। तिर्यंच गति में भी कठिनाई है। अनार्य क्षेत्र में भी संबोधि मिलने में कठिनाई है। शास्त्रकार ने भी यह नहीं कहा कि नहीं मिलेगी, कहा है, संबोधि मिलना दुर्लभ है।

वर्तमान में तो माहौल अच्छा है, तो तुम संबोधि की दिशा में आगे बढ़ो। यहाँ संबोधि अच्छी मिल गई तो और आगे के जन्मों में संबोधि प्राप्त हो सकेगी, विकास हो सकेगा। तीसरी बात बताई है कि रात्रियाँ जो बीत जाती हैं, लौटकर नहीं आती हैं। बीत गया वो वापस आता नहीं। जो समय है, उसका बढ़िया उपयोग कर लें। फिर वो हमारी रात्रियाँ सफल, सुफल हो जाएगी।

चौथी बात बताई है कि जीवन-सूत्र के टूट जाने पर उसे पुनः साधना सुलभ नहीं है। आयुष्य टूट तो सकता है, पर बढ़ाया नहीं जा सकता यह मान्यता है। जब तक जीवन काल है, उसका बढ़िया उपयोग करते रहो।

मनुष्य जीवन है, बड़ा महत्त्वपूर्ण जीवन है, अगर हम इसका अनुपम प्रयोग कर सकें। बढ़िया उपयोग हमारे इस जीवन की सुफलता हो सकती है। मानव जीवन में आसक्ति-भोग में रह गए तो फिर साधारण जीवन बीत जाता है। यह एक प्रसंग से समझाया कि एक सूई भी यहाँ से साथ में जाने वाली नहीं है। साथ में कोई संपत्ति जाने वाली नहीं है।

संतों के कभी कपड़ों में जेब नहीं होती। इससे प्रेरणा लें कि साथ में कुछ नहीं जाने वाला। कर्मों में मान लें जेब होती है, उसमें पुण्य-पाप है।, वो साथ में चले जाते हैं।

छापर व्यवस्था समिति के लोग पूज्यप्रवर की सन्निधि में पहुँचे। छापर-चतुर्मास २०२२ के लोगो का अनावरण पूज्यप्रवर के श्रीचरणों में हुआ। पूज्यप्रवर ने फरमाया कि हमारा अगला २०२२ का चतुर्मास परमपूज्य कालूगणी की जन्म-स्थली छापर के लिए निर्धारित है। पूज्य कालूगणी के शिष्य हमारे गुरु रहे हुए हैं। लोगो में पूज्य कालूगणी का भी फोटो है। हरिण और हरा-भरा वृक्ष भी है। हमारा छापर का चतुर्मास भी हरा-भरा रहे।

अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटि के राष्ट्रीय महासचिव धीरज गुर्जर जो भीलवाड़ा से ही हैं, पूज्यप्रवर के दर्शन किए और भी कार्यकर्ता भी आए हैं। प्रकाश सुतरिया-अध्यक्ष भीलवाड़ा समिति ने आगंतुक मेहमानों का स्वागत किया। धीरज गुर्जर ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। पूज्यप्रवर ने प्रेरणा स्वरूप आशीर्वचन फरमाया।

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी ने कहा कि मनुष्य अनेक चित्त वाला होता है। आचारंग सूत्र में बताया गया है कि इस कारण आदमियों को अलग-अलग वर्गों में बाँटा गया है, उनके पाँच प्रकार हैं। जहाँ जीवन है, वहाँ अनेक प्रकार की समस्याएँ होती हैं। संतों के सत्संग में उन समस्याओं का समाधान मिल सकता है। परिस्कार की चेतना जाग जाए तो व्यक्ति अच्छा और प्रशस्त जीवन जी सकता है।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि आश्रव को कुछ लोग अजीव मानते हैं, पर वास्तव में आश्रव जीव ही है। शास्त्रों के अध्ययन से व्यक्ति के मन में तप की भावना भी जागृत हो सकती है। तपस्या हमारी आत्मशुद्धि में हेतुभूत बनती है।

छापर चतुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष माणकचंद नाहटा ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। भिक्षु भजन मंडल-छापर ने सुमधुर गीत का संगान किया।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने बताया कि हम अध्यात्म की दिशा में आगे बढ़ते जाएँ।

मुंबई स्तरीय 'उन्नयन' कार्यशाला का आयोजन

कांदिवली- मुंबई।

तेरापंथ भवन में साध्वी राकेश कुमारी जी के सान्निध्य में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के नवमनोनीत अध्यक्ष पंकज डागा की अध्यक्षता में 'उन्नयन' कार्यशाला का आयोजन हुआ।

सर्वप्रथम जैन संस्कार विधि से सभी पदाधिकारियों का स्वागत एवं जैन ध्वजारोहण से उन्नयन कार्यशाला का शुभारंभ किया गया। तेयुप कांदिवली-मलाड की संपूर्ण टीम ने मिलकर उन्नयन गीतिका की प्रस्तुति दी। तेयुप कांदिवली अध्यक्ष मनीष रांका ने सभी का स्वागत किया।

साध्वी श्री राकेश कुमारीजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि स्वपन और संकल्प दोनों को एक-दूसरे की कड़ी बताते हुए कहा की जब तक स्वप्न नहीं देखोगे तो संकल्प नहीं ले पाओगे और जब तक संकल्प नहीं लोगे तो संघ को सेवाएँ नहीं दे पाओगे। सबसे पहले हमें हमारी शक्ति को पहचानने की जरूरत है। हम अपने अंदर के विकास को सबल बनाना होगा। उन्नयन न केवल उठाने का नाम है उन्नयन पर्वत के शिखर तक पहुँचने का सन्मार्ग है। संघ मजबूत होगा तो समाज समृद्ध बनेगा और जो समाज समृद्ध होता है, संगठित होता है वो सशक्त होता है।

साध्वी मलयविभा जी ने उन्नयन को किस तरह अपने जीवन में, संघ के लिए और अपने आप के लिए कैसे विकसित कर सकते हैं, उस पर प्रकाश डाला। उन्होंने आज के युग में ऐसी कार्यशालाओं की महत्ता को बताते हुए कहा की कैसे ये कार्यशाला पथ प्रशस्त करती है और लक्ष्य तक पहुंचाने में सहायक होती है।

अभातेयुप सहमंत्री भूपेश कोठारी ने संपूर्ण प्रबंध मंडल का स्वागत किया और २०२३ के आचार्य महाश्रमण जी के चातुर्मास के लिए मुंबई युवा शक्ति को तन मन धन से समर्पित रहने का संकल्प दिया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा ने कांदिवली-मलाड के संयुक्त परिषद् की आयोजना को बधाई देते हुए युवकों को संबोधित करते हुए कहा कि हमें कथनी और करनी की समानता रखनी है। हमें पूर्ण विश्वास के साथ हर कार्य की क्रियान्विति करनी होगी। ये कार्यशाला जब सफल होगी जब हम नए युवकों को धर्मसंघ से जोड़ेंगे। उन्होंने युवादृष्टि घर-घर पहुंचे ऐसा संकल्प उन्होंने समस्त परिषदों को दिया। जैनत्व को पुष्ट करना है तो जैन संस्कार विधि को जन-जन तक पहुँचाना होगा और सबसे पहले उसे स्वयं अपनाना होगा।

परिषदों में जोश भरते हुए उन्होंने कहा कि कोई परिषद् छोटी बड़ी नहीं होती जिस परिषद् में ललक होती है कुछ कर गुजरने की वो मंजिल से फिर दूर नहीं रहती। उन्होंने सबसे कहा कि आचार्य महाश्रमण जी के रास्ते की सेवा का लाभ हर परिषद् को लेना चाहिए, यह वो अनमोल घड़ी होती है जब हम हमारे आराध्य हमारे प्रभु के सबसे निकट रहते हैं।

अभातेयुप राष्ट्रीय महामंत्री श्री पवन मांडोत ने अपने वक्तव्य में परिषदों को संघ के प्रति समर्पित रहकर कार्य करने की प्रेरणा दी। उपाध्यक्ष-प्रथम रमेश डागा, उपाध्यक्ष-द्वितीय जयेश मेहता, कोषाध्यक्ष भरत मरलेचा, सहमंत्री अनंत बागरेचा की भी उपस्थिति रही।

मुंबई चातुर्मास के व्यवस्था समिति के अध्यक्ष मदनलाल तातेड़, तुलसी महाप्रज्ञ फाउंडेशन के ट्रस्टी श्रीमान राकेश कठोतिया युवा गौरव श्री बी०सी० भालावत, निवर्तमान अभातेयुप अध्यक्ष संदीप कोठारी, उन्नयन कार्यशाला का प्रायोजक के०एल० परमार, श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा मुंबई के अध्यक्ष नरेंद्र तातेड़, अणुव्रत समिति की अध्यक्षा कंचन सोनी, तेरापंथ महिला मंडल मुंबई की अध्यक्षा रचना हिरन आदि ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। मलाड मंत्री पुखराज सिरोहीया ने आभार व्यक्त किया।

रक्तदान शिविर का आयोजन : मलाड तेरापंथ युवक परिषद् ने मानव सेवा को समर्पित रक्तदान शिविर का आयोजन भी किया जिसमे ७८ रक्त दाताओं ने रक्त दान किया।

मुंबई अभातेयुप टीम ने अपनी ओर से ५१ लाख रुपये का अनुदान और श्री बी० सी० भलावत ने २१ लाख का अनुदान देने की घोषणा की।

कांदिवली, मलाड, बोरीवली द्वारा चौका सत्कार के प्रत्येक परिषद् की ओर से सवा लाख रुपये का चौका सत्कार के लिए अनुदान देने का संकल्प किया।

कांदिवली तेरापंथ युवक परिषद् ने भिक्षु भजनों की संयुक्त भजनावली 'भावों का गुलदस्ता' पुस्तक का विमोचन किया।

हरियाणा राज्य का प्रथम आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर का शुभारंभ

मंडी आदमपुर, हरियाणा।

आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर ६७वीं एवं हरियाणा राज्य की प्रथम शाखा का भव्य शुभारंभ 'जैन संस्कार विधि' द्वारा 'मंडी आदमपुर' में हुआ।

तेयुप साथियों द्वारा विजय गीत व महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण के साथ मंचीय कार्यक्रम प्रारंभ हुआ।

तेयुप अध्यक्ष श्री सूर्यकान्त जी जैन ने सभी आए हुए श्रावको का स्वागत किया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा ने कहा कि हरियाणा की यह पहली ATDC का शुभारंभ हुआ है जिसका उदाहरण समस्त भारत में दिया जायेगा। उन्होंने कहा कि तेरापंथ युवक परिषद आदमपुर जैसी छोटी शाखा सेवा के क्षेत्र में अभूतपूर्व कार्य करके समाज को अमूल्य सेवा दे रही है। अध्यक्ष महोदय ने आदमपुर परिषद की प्रसन्ना करते हुए कहा कि आदमपुर परिषद ने कोरोना काल में जो सेवा कार्य किए , उससे आदमपुर में एक विशिष्ट पहचान बनाई है ओर आज मानव सेवा को समर्पित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेन्टर का शुभारंभ कर सेवा के क्षेत्र में एक कदम आगे बढ़ाया है। उन्होंने कहा कि आदमपुर की ATDC को चलाने में अभातेयुप का पूर्ण सहयोग रहेगा। अब हरियाणा पंजाब की परिषदों को कही ओर जाकर ATDC देखने की जरूरत नही पड़ेगी बल्कि अब आदमपुर की ATDC रोलमॉडल बन कर इस क्षेत्र में ओर ATDC की सम्भावना को जागृत करेगी। इस कार्यक्रम में उन्होंने राष्ट्रीय कार्यकारणी का विस्तार करते हुए सतीश जी पुगलिया व अरुण गर्ग को क्षेत्रीय सहयोगी के रूप में अभातेयुप में मनोनीत किया।

महामंत्री पवन मांडोत ने कहा कि तेयुप आदमपुर भले ही संख्या बल में कम है पर काम बहुत बड़ा किया है। तेयुप आदमपुर के प्रति मंगलकामना करते हुए पूरे टीम को बधाई दी। तेयुप आदमपुर टीम का उत्साह सब परिषदों के लिए प्रेरणा का कार्य करेगा।

राष्ट्रीय प्रभारी अर्पित नाहर ने कहा कि इस सत्र की पहली ATDC की शुरुआत पहली बार हरियाणा राज्य से ही हुई है इसके लिए आदमपुर तेयुप साधुवाद की पात्र है।

कार्यक्रम में अभातेयुप के कार्यसमिति सदस्य देवेंद्र डागा व क्षेत्रीय सहयोगी अनुज गोयल विशेष रूप से उपस्थित थे। संस्कारकों के रूप में अरुण गर्ग, सतीश पुगलिया, कमल सुराणा ने अपनी सेवाएँ दी।

महासभा में परामर्शक घीसाराम ने सभी गणमान्य व्यक्तियों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का सफल संचालन अरुण गर्ग ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
15 - 21 नवंबर, 2021

✦ *हमारी दुनिया में अज्ञान कष्ट है, अभिशाप है तथा ज्ञान वरदान है। अज्ञानी अपने हित और अहित का विवेक नहीं कर पाता।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

भगवान महावीर मोक्ष कल्याणक-दीपावली

अज्ञान रूपी अंधकार को मिटाने ज्ञान रूपी दीपक जलाएँ : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, ४ नवंबर, २०२१

वर्तमान के महावीर, जैन धर्म के प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमण जी ने दीपावली पर अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि आज भगवान महावीर का परिनिर्वाण दिवस है। कार्तिक कृष्णा अमावस्या है। वर्तमान अवसर्पिणी के इस जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में अंतिम चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर हुए। उन्होंने जन्म लिया चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को। गार्हस्थ्य में भी लगभग ३० वर्ष तक रहे।

लगभग साढ़े बारह वर्षों तक मुनीत्व के साथ साधनाकाल बीता। इतने उपसर्ग आए और वे अपनी साधना में रहे। वैशाख शुक्ला दशमी को उन्होंने कैवल्य को प्राप्त किया। आज अमावस्या की अंधेरी रात है। ये अंधेरी रात भी एक त्योहार बन गया। यों अमावस्या को अच्छा नहीं माना गया है, पर भगवान महावीर के साथ आज का दिन जुड़ जाने से मानो ये तिथि भी धन्य हो गई।

आज के दिन जगमगाहट होती है, दीपक प्रज्ज्वलित होते हैं। कहा गया है कि अन्याय भी न्याय हो जाता है, जब तेजस्वी व्यक्ति उसे स्वीकार कर लेते हैं। अमावस्या काली रात है, पर महोत्सव बन गई कारण वह तेजस्वी दीपों के साथ जुड़ गई। दीपकों ने इसे अपना लिया। भगवान महावीर महातेजस्वी थे, उनके साथ यह रात्रि जुड़ गई, यह भी मानो महोत्सव बन गई।

दीपावली के दिन-दीपक जलते हैं। टिमटिमाते दीपक आँखों को भी अच्छे लगते हैं। दीपावली ज्योति पर्व है। भगवान महावीर महाज्योति पुरुष थे। वो भाव ज्योति तो ऊपर चली गई। भगवान महावीर की परंपरा भी आगे चली गई है। कितने-कितने आचार्य और साधु-साध्वियाँ हुए हैं। आज भी उनके शासन में साधनाशील और श्रुतसंपन्न हैं। आगमों के माध्यम से भी भगवान की ज्योति जल रही है।

आज का दिन अंधकार में प्रकाश करने का दिन है। अज्ञान के अंधकार में ज्ञान का दीया जलाएँ। स्वाध्याय अपने आपमें ज्योति

है, स्वाध्याय का दीया जलता रहे। आगमों के संशोधन, संपादन में कितना श्रम गुरुदेव तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ जी का लगा होगा। आज जो आगम हमारे पास है, एक बहुत बड़ी उपलब्धि में उनका अनुग्रह रहा है। अब भी काम अवशेष चल रहा है। शीघ्र यह कार्य अशेष को प्राप्त करे। गृहस्थ भी स्वाध्याय का लाभ ले सकते हैं।

आचार्य भी दीप के समान होते हैं। दीये से दीया जले। भारत में तो आज यह विशेष पर्व होता है। आतिशबाजी में भी संयम रहे, यह वांछनीय है। कई मिठाइयाँ खाते हैं, तो कई तप रूप में तेले-उपवास भी करते हैं। हम दीपावली को आध्यात्मिक रूप में मनाएँ। भगवान महावीर का स्मरण करें। लोगुत्तमे समणे नाय-पुत्ते का जप करें। ऐसा भी चलता है—महावीर स्वामी केवल ज्ञानी, गौतम स्वामी चऊ नाणी। महावीर पहुँचे निर्वाण, गौतम पाया केवलज्ञान। यह भी आम भाषा में चलने वाला जप है। हम भी यहाँ आध्यात्मिक साधना को आज के दिन बढ़ाने का प्रयास करते रहें।

साध्वीप्रमुखाश्री जी ने कहा कि आज भगवान महावीर का निर्वाण दिवस है, प्रकाश का पर्व है, प्रकाश की आराधना का पर्व है। हर व्यक्ति चाहता है कि उसका जीवन प्रकाशमय हो। जीवन में उजाला हो, उसके लिए आवश्यक है, साधना और संयम पथ। परमपूज्य आचार्यप्रवर के दीक्षा के ५० वर्ष पूरे होने वाले हैं। इस ५०वें वर्ष को संघ की ओर से किस रूप में मनाएँ। आचार्य महाश्रमण दीक्षा कल्याणक के रूप में इसे मनाया जाए। इसकी घोषणा तो परमपूज्य करवाएँगे, हम तो निवेदन कर रहे हैं। इसके लिए साधु-साध्वियों व श्रावक-श्राविकाओं के लिए ५१-५१ संकल्प तय किए गए हैं। आचार्यप्रवर चतुर्विध धर्मसंघ की प्रार्थना को स्वीकार करवाएँ।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि भक्तामर स्त्रोत में लिखा है कि प्रभो! इस जगत को प्रकाशित करने वाले एक अलौकिक दीपक हो। लौकिक दीपक में बाती के साथ धुआँ भी निकलता चला जाता है। लेकिन अलौकिक दीपक निर्धूम होता है।

मुनि सुरेश कुमार जी ने आगे साधना करने की भावना श्रीचरणों में रखी। साध्वी शारदाश्री जी आदि साध्वियों ने दीपावली का गीत गाया।

बजरंग जैन ने मुमुक्षु बाईयों को विदेश भेजने की तैयारी करने के लिए पूज्यप्रवर से अनापत्ति प्रदान करवाने के लिए अपनी भावना रखी।

मुमुक्षु बाईयों को धर्मप्रचार के लिए विदेश भेजने की अनुमति

मुमुक्षु बाईयाँ पा०शि० संस्था में शिक्षण प्राप्त करती है, उनका भी देश-विदेश में उपयोग हो। मुमुक्षु बाईयों का उपयोग यथा औचित्य, यथानुकूलता विदेश में भी हो। विदेश में भी जैन समाज के लोगों में धर्म की ज्योति जले। पा०शि० संस्था यह कार्य करती है, तो कोई आपत्ति वाली बात नहीं है। इनका शिक्षण हो जाए, फिर इनका उपयोग हो। मुमुक्षु बाईयाँ भी अपना ज्ञान का, साधना का विकास करें। योग्यता प्राप्त करें। साध्वियों, समणियों, मुमुक्षुओं, श्राविकाओं को साध्वीप्रमुखाश्री जी ही संभालने वाले हैं। मैं मुमुक्षु बाईयों की धार्मिक सेवा की अनुमोदना करता हूँ। हम भी इसकी आज स्थापना करते हैं कि मुमुक्षु बाईयों का भी विदेश की धरती पर यथोचित्य उपयोग हो।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

आचार्य महाश्रमण दीक्षा कल्याणक महोत्सव की घोषणा

चतुर्विध धर्मसंघ द्वारा आचार्यप्रवर के ५०वें दीक्षा वर्ष को विशेष रूप मनाने के निवेदन पर पूज्यप्रवर ने संपूर्ण धर्मसंघ को दीपावली का उपहार देते हुए फरमाया कि मेरी दीक्षा वि०सं० २०३१ वैशाख शुक्ला चतुर्दशी को हुई थी। मुनि उदित कुमार जी की भी साथ में दीक्षा हुई थी। वि०सं० २०८१ वैशाख शुक्ला चतुर्दशी को दीक्षा के ५० वर्ष होने वाले हैं। साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी व मुख्य मुनि जी ने इसे मनाने की भावना रखी है, मैं इसको स्वीकार कर लेता हूँ। मेरा पचासवाँ दीक्षा दिवस मुख्यतया आध्यात्मिकता के रूप में मनाया जाए, इसकी मैं स्वीकृति प्रदान कर लेता हूँ। आचार्य महाश्रमण दीक्षा कल्याणक महोत्सव इस नाम को भी स्वीकार कर लेता हूँ।

इसका प्रारंभ सन् २०२३ में यथासंभव सूरत में करने का भाव है। उस समय वहाँ रहने का भाव है। मेरे इस दीक्षा महोत्सव में 'मुमुक्षु संख्या वृद्धि' यह मेरी दृष्टि से सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण काम है। आज से ही यह कार्य शुरू समझें। आज से जो मुमुक्षु तैयार हों वे इस दीक्षा कल्याणक के अंतर्गत ही माना जाए। जितना प्रयास हो सके काम करना चाहिए। मुनि सुरेश कुमार जी की भी साधना आगे बढ़े। परम पूज्य भगवान महावीर की साधना से हमें प्रेरणा मिलती रहे। आचार्यप्रवर ने मुनि उदित कुमार जी के जन्मदिवस पर फरमाया कि आप धर्मसंघ की सेवा में सदैव लगे रहे।

सम्यग् दर्शन, ज्ञान और चारित्र प्राप्त करने का प्रयास करें : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, ७ नवंबर, २०२१

तेरापंथ के एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि सूयगड़ो आगम में बताया गया है—भगवान ऋषभ ने अपने संसारपक्षीय पुत्रों से कहा कि संबोधि को प्राप्त करो। संबोधि को क्यों प्राप्त नहीं होते? जो वर्तमान में संबोधि को प्राप्त नहीं होता, उसे अगले जन्म में भी वह सुलभ नहीं होता।

संबोधि बहुत अच्छी उपलब्धि होती है। सम्यग् ज्ञान, दर्शन और चारित्र इस रत्नत्रयी की प्राप्ति के रूप में संबोधि मिल जाए, कितनी बड़ी संपदा प्राप्त हो सकती है। आदमी भौतिक संपदा पाने का प्रयास करता है। भगवान ऋषभ ने अपने पुत्रों को मानो एक दिशा में दिखा दी कि भौतिक साम्राज्य में क्या? ऐसा साम्राज्य प्राप्त करो जो मिलने के बाद वापस जाए ही नहीं।

हम सभी भगवान ऋषभ की परंपरा में हैं, उनके पुत्र हैं। यह उनका संदेश केवल उन ९८ पुत्रों के लिए हम सबके लिए संबोध है। किसी के निमित्त से बात कही जाती है, पर कितनों के लिए काम की हो सकती है। जैसे उत्तराध्ययन आगम के दसवें अध्ययन में भगवान का गौतम के नाम संदेश है—समयं गोयम मा पमायए। इस एक बात को विभिन्न कोणों से विख्यात किया गया है। हम भी उनकी संतान-शिष्य हैं, तो ये संदेश हमारे लिए भी है। वैसे ही दशवैआलियं आगम है, जो एक मनक के लिए बनाया होगा और आज कितने मनक उसे काम में ले रहे हैं।

परमपूज्य आचार्य महाप्रज्ञ जी ने तो संबोधि ग्रंथ की रचना कर दी। मुनि मेघ को भी भगवान महावीर से संबोधि मिला था। आदमी का दर्शन, श्रद्धा सम्यग् हो जाए। फिर ज्ञान सम्यग् हो जाए और फिर चारित्र भी प्राप्त हो जाए। ये तीन बोधि हो जाती हैं। **(शेष पृष्ठ १० पर)**

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **संदीप कोठारी** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**